पुराने नियम
के
अनुसार

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया
बॉक्स ३८१५
नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण-१९७९

प्रिंट इण्डिया, नई दिल्ली-११००६४

लेखक की अन्य रचनाएं :

सत्य सुसमाचार

उद्धार की योजना

क्रूस की कथा

खाली कब्र

१५ प्रभावशाली रेडियो प्रवचन

२० लघु रेडियो संदेश

मुक्ति के संदेश

हम किसके पास जाएं

यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे...

जीवन के वचन

मसीही संदेश

सुसमाचार बोनेवाला (अनुवादित)

रेडियो प्रोग्राम गाईड

आत्म-शान्ति तथा परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए सुनिए लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम सत्य-सुसमाचार :

प्रत्येक :

मंगलवार—रात को	9: ०० से 9 : 15 तक
बृस्पतिवार—रात को	9 : ०० से 9 : 15 तक
शुक्रवार—रात को	9 : ०० से 9 : 15 तक
शनीवार—रात को	9 : 45 से 10 : ०० तक

प्रचारक :

सनी डेविड

भूमिका

प्रेरित पौलुस नए नियम में एक जगह कहता है, "जितनी बात पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।" (रोमियों १५ : ४) । यहां प्रेरित का अभिप्राय पहिले से लिखी गईं उन बातों से है जो मसीह से पूर्व लिखी गईं थीं, और जिन्हें आज हम बाइबल के पुराने नियम में पढ़ते हैं। इसी आदेश को ध्यान में रखकर **'पुराने नियम के अनुसार'** की रचना की गई है। प्रस्तुत पुस्तक में जिन पाठों को आप पढ़ने जा रहे हैं, वे लगभग सभी पुराने नियम की शिक्षाओं पर आधारित हैं। विशेष रूप से, पुराने नियम में वर्णित नामान कोढ़ी तथा इस्त्राएलियों से सम्बन्धित घटनाओं से मिलनेवाली शिक्षाओं पर अधिक बल दिया गया है। मेरा विश्वास है कि पाठकगण इन शिक्षाओं से अपने जीवनों में अवश्य ही लाभ उठाएंगे।

साथ ही, पाठकों से मेरा विशेष आग्रह है, कि यदि उनके पास बाइबल की प्रति उपलब्ध है, तो उन्हें चाहिए कि पुस्तक में दिए गए बाइबल के अध्यायों तथा पदों को वे स्वयं बाइबल में से ही निकालकर देखें।

परमेश्वर की आशीष उसके वचन पर चलनेवालों के ऊपर होती रहे।

—लेखक

परीचय

प्रवचनों की ये शृंखला मुख्यत: पुराने नियम, अर्थात् बाइबल के प्रथम भाग में लिखी बातों पर आधारित है। पुराना नियम यद्यपि एक नियम अर्थात् एक कानून के दृष्टिकोण से आज लोगों के लिए नहीं है, क्योंकि मसीह ने क्रूस के ऊपर अपनी जान देकर उसे पूरा किया और उसे हटाकर उसके स्थान पर हमें अपना नया नियम दिया है, किन्तु फिर भी वह परमेश्वर का वचन है, और उसमें आज हमें बड़े अच्छे-अच्छे सिद्धान्त तथा आदर्श मिलते हैं जिनकी आज हमें बहुत आवश्यकता है। कुरिन्थुस में मसीहीयों के नाम अपनी पत्री में पौलुस ने पुराने नियम में लिखी कुछ घटनाओं का वर्णन करने के बाद, उनसे कहा, "ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें...परन्तु ये सब बातें जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं : और वे हमारी चितावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं।" (१ कुरिन्थियों १ : ६, ११)।

पुराने नियम के अनुसार जब आप इन घटनाओं तथा शिक्षाओं को प्रस्तुत पृष्ठों में पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि ये विचारपूर्ण, ध्यान देने योग्य तथा प्रेरणादायक हैं। और कदाचित आप पवित्र शास्त्र के इस पहिले भाग को यह देखने के लिए स्वयं पढ़ना चाहेंगे कि मसीह से पूर्व परमेश्वर का लोगों के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध था। इन पृष्ठों के अध्ययन से आप अनेकों महत्वपूर्ण पाठ सीखेंगे, और मसीह तथा उसके नए नियम का महत्व आपके निकट और अधिक बढ़ जाएगा। इसी प्रकार, आप यह भी देखेंगे कि परमेश्वर के निकट आज्ञापालन

का कितना अधिक महत्व है, और जो उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं वे उसकी ओर से आशीष पाते हैं, किन्तु जो उसकी नहीं मानते उन्हें अपने अविश्वास का दण्ड मिलता है।

भाई सनी डेविड ने इन प्रवचनों को लिखा है। ये प्रवचन पुस्तक में वैसे ही दिये जा रहे हैं जैसे कि "सत्य सुसमाचार" में रेडियो द्वारा इनका प्रसारण किया गया है। इन प्रवचनों को पढ़कर यदि आप परमेश्वर के वचन के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं अथवा उसकी आज्ञाओं को पालन करने में हमारी सहायता लेना चाहते हैं, तो हमें सूचित कीजिए।

हमेशा की तरह, एक बार फिर से मुझे भाई डेविड के साथ इन प्रवचनों की रिकॉर्डिंग करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं प्रभु को धन्यवाद देता हूं। हमारे सब परिश्रम से प्रभु के राज्य की उन्नति हो, और उसके नाम की महिमा युगानुयुग होती रहे।

जे० सी० चोट

मसीह की कलीसिया

मार्च ६, १९७९.

पाठों की सूची

१. 'परन्तु वह कोढ़ी था' १

२. नामान की कहानी से कुछ महत्वपूर्ण पाठ ७

३. नामान की कहानी से कुछ और शिक्षाएं १३

४. अविश्वास के कारण १९

५. 'मार्ग के कारण' २५

६. 'क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता' ३१

७. परमेश्वर ने दिया है, क्या आप लेने को तैयार हैं ? ३७

८. मिस्र में, जंगल में, या पहाड़ी देश में ? ४३

९. 'जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते, परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के' ४९

१०. मनुष्य उद्धार पाने के लिए क्या करे ? ५५

"परन्तु वह कोढ़ी था"

मित्रो:

मुझे खुशी है कि यह अवसर मुझे मिला है कि इस समय मैं आपके मनों को परमेश्वर के पवित्र वचन की ओर लगाऊं। बाइबल में, राजाओं के वृतान्त की दूसरी पुस्तक के पांचवें अध्याय में हम नामान नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं। नामान के बारे में लिखा है, कि वह उस समय के अराम नाम देश के राजा का सेनापति था और एक बड़ा ही प्रतिष्ठित व्यक्ति था और शूरवीर था। किन्तु जबकि नामान के विषय में यह सब कुछ लिखा है, आगे हम उसके बारे में यूं पढ़ते हैं, "परन्तु वह कोढ़ी था।"

कोढ़ एक बड़ा ही भयानक रोग है। इस रोग के बारे में तीन बातें बड़े ही निश्चित रूप से कही जा सकती हैं। अर्थात्, सबसे पहले तो यह, कि कोढ़ एक बढ़ने और फैलनेवाला रोग है; और दूसरे यह, कि यह रोग लगनेवाला रोग है; और तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं, कि कोढ़ एक नाशक रोग है। नामान यद्यपि एक बड़ा ही सम्मानित पुरुष था, वह शूरवीर था और अपनी वीरता के कारण प्रसिद्ध था, परन्तु तौभी वह एक कोढ़ी था।

यह बात कितनी विचित्र किन्तु तौभी कितनी विचारपूर्ण है! एक इन्सान धनी वा प्रतिष्ठित हो सकता है, मान वा सम्मान प्राप्त कर सकता है, किन्तु तौभी वह एक ऐसे रोग का शिकार हो सकता है जिससे न तो उसका धन, न प्रतिष्ठिता और न उसका मान वा सम्मान उसे छुटकारा दिला सकते हैं। पवित्र बाइबल कहती है, "कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३:२३)। क्या आपने सुना? जी हां, "सबने पाप किया है।"

नामान की तरह शायद आप प्रतिष्ठित हों, कदाचित आपके पास एक सुन्दर घर हो, शायद आप धनी हों, मान वा सम्मान आपको प्राप्त हो; कदाचित आपको अपनी कला या अपनी शक्ति पर घमण्ड हो, किन्तु चाहे जो कुछ भी हो, परमेश्वर अपने वचन में कहता है, कि आप उसकी दृष्टि में एक पापी हैं। पाप के बारे में परमेश्वर का वचन कहता है, कि अन्धकार के काम या शरीर के काम और परमेश्वर की आज्ञाओं पर न चलना पाप है। किन्तु कोढ़ की तरह पाप भी एक ऐसा भयानक रोग है जो शीघ्र ही बढ़ता और फैलता है, और अपने सम्पर्क में आनेवाले लोगों को लगता है और फिर अन्त में मनुष्य के नाश का कारण बनता है।

और आज मैं आपको यही बताने जा रहा हूं कि आप इस बढ़ने और लगनेवाले और नाश करनेवाले रोग पाप के ऊपर ध्यान दें, और इस बात के ऊपर विचार करें कि इससे पहले कि यह बहुमूल्य समय आपके हाथ से निकल जाए आप उस एकमात्र छुटकारा देनेवाले को जान लें जो इस भयंकर रोग से बचाकर आपको शुद्ध कर सकता है। क्योंकि पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, कि धोखा न खाओ, मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा, "पर डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गंधक से जलती रहती है; यह दूसरी मृत्यु है।" (गलतियों ६:७ तथा प्रकाशित० २१:८)। निसंदेह, जबकि पाप का परिणाम इतना भयंकर है, तो हमें इस ओर सारी गम्भीरता के साथ ध्यान देना चाहिए, और विशेषकर इसलिये, क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है, कि हम सबने पाप किया है।

किन्तु आईये, अब हम यह देखें कि पाप किस प्रकार एक बढ़ने वा फैलनेवाला रोग है। एक अन्य जगह बाइबल में लिखा है, "परन्तु

प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४, १५)। यहाँ से हम देखते हैं, कि मनुष्य अपनी ही अभिलाषा के वश में होकर पाप करता है। और क्योंकि मनुष्य अपनी अभिलाषाओं को अपने वश में नहीं कर पाता, इस कारण वह शीघ्र ही स्वयं अभिलाषाओं के वश में आकर पाप करता चला जाता है। मैं ऐसे अनेकों लोगों को जानता हूं, और कदाचित आप भी अवश्य ही जानते होंगे, जिन्होंने अपनी अभिलाषा के वश में आकर या मित्रों इत्यादि के कहने में आकर कुछ समय पूर्व, शायद डरते-डरते, थोड़ी सी मात्रा में शराब या सिगरेट या जुए इत्यादि की शुरुआत की होगी। किन्तु आज वे शराबी, पीनेवाले, जुआरी, इत्यादि बन चुके हैं, क्योंकि पाप उनके जीवन में फैल चुका है। और इस कारण, अब वे अपनी पहचान और अपने अस्तित्व को भी खो चुके हैं, सो अब वे मात्र शराबी, जुआरी, या अपराधी कहलाते हैं!

बाइबल का एक लेखक कहता है, "क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है।" (भजन० १:१)। और यह बिल्कुल सच है! आज अनेकों लोग अपना चरित्र बिगाड़ चुके हैं, उनके जीवन में बुराइयों के कारण लोग उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं। परन्तु वे हमेशा से ऐसे न थे। आज बे बिगड़ चुके हैं, उन्होंने अपने जीवनों को नष्ट कर लिया है, केवल इसलिये क्योंकि वे दुष्टों की युक्तियों पर चलने लगे और पापियों के मार्ग में खड़े होने लगे और उन लोगों की संगति में बैठने लगे जो परमेश्वर और धार्मिकता का हंसी वा ठट्ठा उड़ाते हैं। यह सच है, जैसे कि बाइबल का एक अन्य लेखक कहता है कि, बुरी संगति अच्छे चरित्र

को बिगाड़ती है। मित्रो, आप जो इन बातों को सुन रहे हैं, मैं आपसे निवेदन करके कहना चाहता हूं, कि आप इस बात के ऊपर ध्यान दें कि आपकी संगति किस प्रकार के लोगों के साथ है। मैं जानता हूं, कि बहुतेरे लोग कई बार अपने ऊपर भरोसा रखकर कहते हैं कि मैं ऐसा नहीं कर सकता या मैं ऐसा नहीं बन सकता। परन्तु याद रखिए, पाप एक लगनेवाला रोग है। और उसका परिणाम बड़ा ही भयानक है।

कोढ़ तो मनुष्य के शरीर को नष्ट करता है, परन्तु मित्रो, पाप उससे भी बहुत अधिक हानिकारक है, क्योंकि पाप मनुष्य की आत्मा को नाश करता है। शरीर तो नाशमान है, परन्तु आत्मा मनुष्य का जीवन है, यह जीवन मनुष्य को परमेश्वर ने दिया है ताकि वह अपने सृजनहार की महिमा और बड़ाई करे। और जब मनुष्य अपने परमेश्वर की इच्छानुसार पृथ्वी पर अपना जीवन व्यतीत करके उसके पास वापस चला जाता है, तो फलस्वरूप वह उसे अनन्त जीवन देता है। परन्तु यदि मनुष्य अपने जीवन को बिगाड़ ले और अपने सृजनहार की महिमा करना छोड़कर उसकी इच्छा के विरुद्ध चलने लगे, तो परमेश्वर का वचन कहता है कि ऐसा मनुष्य नरक के अनन्त दण्ड का भागी होगा। प्रभु यीशु ने इस बात को एक जगह यूं कहकर दर्शाया, कि अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)।

सो यदि मनुष्य अपने जीवन से प्रेम करता है और अपनी आत्मा के महत्त्व को समझता है, तो वह उसे बचाने के लिये कदापि देर न करेगा। और विशेषकर इसलिये जबकि परमेश्वर का वचन कहता है कि हम सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, तो यह कर्त्तव्य हम सब का है कि हम उसके पास आकर उसकी इच्छा को जानें कि अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना

चाहिए । क्या कभी आपने ऐसा किया ? क्या कभी आप एक अपराधी की नाईं, नम्र होकर उसके सम्मुख आए ? क्या कभी आपने पूरी गम्भीरता के साथ इस बात के ऊपर विचार किया कि परमेश्वर केवल दण्ड और प्रतिफल देनेवाला परमेश्वर ही नहीं है, परन्तु वह एक प्रेम करनेवाला परमेश्वर है ? सो वह केवल हमें यही नहीं बताता कि हम सबने उसके विरुद्ध पाप किया है, लेकिन उसका वचन यह भी कहता है कि हम सब "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" क्योंकि "उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की, उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों ३:२४, २५) ।

सो हम देखते हैं, कि परमेश्वर का वचन हमसे कहता है, कि यीशु मसीह में हमें अपने पापों से छुटकारा प्राप्त होता है। क्योंकि उसे परमेश्वर ने उसके उस लोहू के कारण जो उसने हमारे पापों के फलस्वरूप क्रूस के ऊपर बहाया, एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है । इसलिए, यदि हम अपने जीवन को बचाना चाहते हैं; यदि हम अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं और यदि हम नरक के दण्ड से बचकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम यीशु मसीह में आकर अपने पापों से शुद्ध हो जाएं ।

पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३:२६, २७) ।

मित्रो, नामान के बारे में हमने देखा था, कि उसके पास सब कुछ

था, किन्तु वह कोढ़ी था। लेकिन आगे उसके बारे में हम पढ़ते हैं, कि अपने कोढ़ से शुद्ध होने के लिए वह यात्रा करके यरुशलेम तक गया। यदि आप अपने पापों से शुद्ध होना चाहते हैं, तो परमेश्वर कहता है कि आप यीशु मसीह के पास आएं। क्या आप ऐसा न करेंगे? परमेश्वर आप सबको समझ वा शक्ति दे।

नामान की कहानी से कुछ महत्त्वपूर्ण पाठ

मित्रो :

आपको याद होगा कि अपने पिछले अध्ययन में हमने नामान नाम के एक व्यक्ति के बारे में देखा था। हमने देखा था कि वह अराम के राजा का एक बड़ा ही प्रतिष्ठित सेनापति था, परन्तु वह कोढ़ी था। परन्तु आज इस पूरे वर्णन को हम पवित्र बाइबल में से पढ़ेंगे, जैसा कि बाइबल में दूसरे राजा की पुस्तक के पांचवें अध्याय में हमें मिलता है। क्योंकि इस सम्पूर्ण वर्णन में कुछ बड़े ही महत्वपूर्ण पाठ हैं, जिनके बारे में मेरा विश्वास है कि ये हम सबके लिए बड़े ही आवश्यक हैं और कदाचित इसी कारण इस वर्णन को इस प्रकार लिखवाकर परमेश्वर ने हमें दिया है। सो आईए, हम पढ़ें :

लिखा है, "अराम के राजा का नामान नाम सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और यह शूरवीर था, परन्तु कोढ़ी था। अरामी लोग दल बांधकर इस्त्राएल के देश में जाकर वहाँ से एक छोटी लड़की बन्धुवाई में ले आए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी। उसने अपनी स्वामिन से कहा, जो मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यद्वक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता ! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता। तो किसी ने उसके प्रभु के पास जाकर कह दिया, कि इस्त्राएली लड़की इस प्रकार कहती है। अराम के राजा ने कहा, तू जा, मैं इस्त्राएल के राजा के पास एक पत्र भेजूंगा, तब वह दस किक्कार चांदी और छः हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर रवाना हो गया। और वह इस्त्राएल के राजा के पास वह पत्र ले गया जिसमें यह

लिखा था, कि जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैंने नामान नाम अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिये भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे। इस पत्र के पढ़ने पर इस्त्राएल का राजा अपने वस्त्र फाड़कर बोला, क्या मैं मारनेवाला और जिलानेवाला परमेश्वर हूं कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को इसलिए भेजा है कि मैं उसका कोढ़ दूर करूं? सोच-विचार तो करो," वह बोला, "वह मुझसे झगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा।" परन्तु लिखा है कि "यह सुनकर कि इस्त्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, तू ने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं? वह मेरे पास आए, तब जान लेगा, कि इस्त्राएल में भविष्यद्वक्ता तो है। तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा। परन्तु नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा! क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्त्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं? इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया। तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए। तब उसने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उसमें सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया। तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के यहाँ लौट आया, और

उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा, सुन, अब मैंने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी में इस्त्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है ! इसलिए अब अपने दास की भेंट ग्रहण कर।" (२ राजा ५:१-१५)।

मित्रो, इस पूरे वर्णन से, जैसा कि मैंने अभी कुछ देर पहिले कहा था, हमें अनेकों शिक्षाएं मिलती हैं। सबसे पहली बात जो हम यहां से सीखते हैं उसका सम्बन्ध उस छोटी लड़की से है जिसे अराम के लोग इस्त्राएल से बन्दी बनाकर ले आए थे। यद्यपि वे लोग उसे बन्धुवाई में ले आए थे परन्तु उसके मन में उनके प्रति कोई कटुता न थी। वह चाहती थी कि नामान भी उसी की तरह स्वस्थ हो जाए। उसे परमेश्वर के एक जन के बारे में पता था, और वह जानती थी कि वह उसे चंगा कर सकता है, सो उसने उसे बता दिया। वह अपने ज्ञान को अपने तक ही सीमित न रखना चाहती थी, लेकिन दूसरे ज़रूरतमन्द लोगों को भी देना चाहती थी। आज हम में से बहुतेरे लोग संसार के उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह को जानते हैं, हमने उसके बारे में कई बार सुना है, और हम में से अनेक ऐसे भी हैं जिन्होंने उसकी उद्धार करनेवाली सामर्थ से लाभ उठाया है। परन्तु हम कितने लोगों को उसके बारे में बता रहे हैं? क्या आप उसे जानते हैं? क्या आपने उसके बारे में सुना है? सो क्या आपने परसों उसके बारे में किसी को बताया? क्या आपने कल उसके विषय में किसी को बताया था? क्या आज आपने किसी को बताया? नामान की तरह आज लाखों और करोड़ों लोग पाप के कोढ़ से नाश हो रहे हैं, और आपको और मुझे परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का ज्ञान है जो लोगों को उनके पापों से शुद्ध कर सकता है। सो क्या हमें नहीं चाहिए कि हम उस उद्धारकर्त्ता के बारे में प्रत्येक मनुष्य को बताएं?

फिर, इस वर्णन में एक दूसरी बात हम यह देखते हैं, कि जब नामान को पता चला कि इस्त्राएल में परमेश्वर का एक जन है जो

उसे कोढ़ से शुद्ध कर सकता है, तो वह उसके पास जाने को तत्काल चल पड़ा। किन्तु आपने उस उद्धारकर्त्ता के बारे में कई बार सुना है, आपने यीशु के सुसमाचार को अनेक बार सुना है, परन्तु आप अभी भी प्रतीक्षा कर रहे हैं! बाइबल में एक स्थान पर हम फेलिक्स नाम के एक रोमी हाकिम के बारे में पढ़ते हैं। लिखा है, कि जब प्रेरित पौलुस ने उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया, तो यह कहने के विपरीत कि मैं उसे मानने के लिए अभी तैयार हूं, फेलिक्स ने पौलुस से कहा, "कि अभी तो जा, अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा।" (प्रेरितों २४: २५)। परन्तु मित्रों ऐसा अवसर फेलिक्स के जीवन में फिर नहीं आया, क्योंकि इस विषय में आगे हम और कहीं नहीं पढ़ते। किन्तु फेलिक्स की ही तरह अनेकों लोग उचित समय की प्रतीक्षा करते-करते हमेशा के लिए अनन्तकाल में खो जाते हैं। मित्रो, समय अनिश्चित है, और शैतान नहीं चाहता कि आप परमेश्वर की ओर फिरें। परन्तु इससे पहले कि वह अवसर पाकर आपका मन बदल डाले, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप इस बहूमूल्य अवसर का लाभ उठाएं, और अभी, इसी समय, प्रभु यीशु के पास आने का निश्चय करें। नामान कोढ़ से शुद्ध होने के लिए तत्काल उठकर परमेश्वर के जन के पास चल पड़ा, और यदि आप अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको चाहिए आप अभी, इसी समय, यीशु के पास आने का निश्चय करें।

तीसरे स्थान पर, अपने पाठ से हम यह सीखते हैं, कि यद्यपि नामान अपने कोढ़ से शुद्ध होना चाहता था, किन्तु वह परमेश्वर के जन के पास न पहुंचकर एक गलत मनुष्य के पास पहुंच गया। आज अनेकों लोग उद्धार प्राप्त करने की इच्छा तो अपने मन में रखते हैं, परन्तु वे उसके पास न आकर जो उनका उद्धार कर सकता है अनेकों अन्य वस्तुओं और मनुष्यों इत्यादि के पास जा रहे हैं। किन्तु जिस

प्रकार हम देखते हैं, कि उस समय इस्त्राएल में केवल एक ही परमेश्वर का ऐसा भक्त था जो नामान को कोढ़ से शुद्ध कर सकता था, वैसे ही आज जगत में केवल एक ही उद्धारकर्त्ता है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह, जो हमारे पापों से हमें शुद्ध कर सकता है। क्योंकि वह हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान होकर हमारा प्रायश्चित बना; उसने हमारे दन्ड को अपने ऊपर ले लिया ताकि हम उसके द्वारा बचकर अनन्त छुटकारा प्राप्त करें।

किन्तु जिस प्रकार एलीशा ने नामान के पास स्वयं बाहर न आकर उसके पास यह संदेश भेज दिया कि उसे कोढ़ से शुद्ध होने के लिए क्या करना चाहिए, वैसे ही आज यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता, हमें अपने चेलों के द्वारा आदेश देता है कि उद्धार प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए। अपनी मृत्यु, दफन होने, और कब्र में से जी उठने के पश्चात; स्वर्ग में वापस उठा लिए जाने से पूर्व, यीशु ने अपने चेलों को आदेश देकर कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" अर्थात, उन्हें यह बताओ, कि किस प्रकार यीशु तुम्हारे पापों के प्रायश्चित के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया, और कब्र में गाड़े जाने के बाद वह फिर जी उठा। और फिर, उसने आगे कहा, कि यह सुसमाचार सुनने के बाद, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१५, १६)।

मित्रो, जैसा कि हमने आज अपने पाठ में पढ़ा कि नामान कोढ़ से शुद्ध हो गया जब उसने परमेश्वर के जन के वचन के अनुसार किया, और यदि आप परमेश्वर के पुत्र के वचन के अनुसार करेंगे तो आपका भी आपके पापों से उद्धार होगा। यदि इस सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं तो हमें अवश्य सूचित करें।

अब अपने आज के पाठ को समाप्त करने से पहिले, मैं आपको यह भी बता दूं कि अगली बार हम फिर इसी पाठ में से कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं के ऊपर विचार करेंगे । परमेश्वर आपको आशीष दे ।

नामान की कहानी से कुछ और शिक्षाएं

मित्रो :

अपने पिछले पाठ के अन्त में, जो कि नामान नाम एक व्यक्ति के बारे में था, हमने ऐसा निश्चय किया था कि हम इस पाठ को अगली बार भी जारी रखेंगे, और इसमें मिलनेवाली कुछ और महत्व-पूर्ण शिक्षाओं पर विचार करेंगे। किन्तु, अपने अब तक के अध्ययन में, नामान के बारे में हमने यह देखा था, कि जब नामान को इस बात का पता चला कि इस्राएल में एक भविष्यद्वक्ता है जो उसे कोढ़ से चंगा कर सकता है तो वह उससे भेंट करने के लिए तुरन्त चल पड़ा। दूसरे, हमने यह देखा था, कि वह उस व्यक्ति के पास न पहुंचकर जो उसे वास्तव में चंगा कर सकता था, एक दूसरे मनुष्य के पास जा पहुंचा। और फिर, तीसरे स्थान पर, हमने देखा था, कि जब वह वास्तव में भविष्यद्वक्ता एलीशा के पास जा पहुंचा, तो एलीशा ने उसके पास स्वयं बाहर आने के विपरीत अपने एक दूत के द्वारा उसके पास कहला भेजा। अब, इसके आगे जो कुछ हुआ और उससे हम क्या सीखते हैं इस विषय में हम आज देखेंगे।

पिछली बार इन बातों के बारे में जब हमने पूरा विवरण पढ़ा था, तो आपको याद होगा, कि परमेश्वर के भक्त एलीशा के दूत ने नामान के पास बाहर आकर उसे ऐलीशा का यह संदेश कह सुनाया, "कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।" निश्चय ही यह बात नामान को बड़ी अटपटी-सी लगी, सो लिखा है, कि यह सुनते ही, "नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर

यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा !" हम देखते हैं, मित्रो, कि नामान को कोढ़ था और उसने अवश्य ही कई जगह अपना इलाज करवाया होगा, परन्तु उसे कोई लाभ न हुआ था, और अब, जबकि उसे एक ऐसे भविष्यद्वक्ता के बारे में पता चला था कि वह उसे परमेश्वर की सामर्थ से चंगा कर सकता है, तो वह बड़े ही आनन्द के साथ यह आशा लेकार एलीशा के पास पहुंचा था कि वह उसे पहुंचते ही एकदम चंगा कर देगा। परन्तु परमेश्वर के जन की यह बात सुनकर, कि तू जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी मार तो तू चंगा हो जाएगा, वह बौखला उठा, वह गुस्से में पागल हो गया। उसका तर्क यह था, कि क्या पानी में डुबकी लगाने से कहीं कोढ़ चंगा हो सकता है ? क्या पानी में कोई दवाई या सामर्थ है ? उसको यह बात निरी मूर्खता लगी, सो वह क्रोधित होकर चला गया।

मेरे पास कई बार अनेकों लोगों के क्रोध से भरे पत्र आते हैं, और उनका क्रोध अक्सर इस बात पर होता है, कि मैं क्यों उन्हें और अन्य लोगों को पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की शिक्षा देता हूं; वे नहीं चाहते कि मैं इस बात का प्रचार करूँ कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। (प्रेरितों २:३८; मरकुस १६:१६)। और नामान की तरह उनका भी यही तर्क होता है कि क्या पानी में बपतिस्मा लेने से पानी के द्वारा मनुष्य के पाप धुल जाते हैं ? या क्या पानी में कोई सामर्थ है ? और निसंदेह, बहुतेरे लोग नामान की ही तरह अपने आपको बुद्धिमान जताकर प्रभु की आज्ञा माने बिना ही चले जाते हैं। क्योंकि जैसे नामान को कोढ़ से चंगा होने के लिए यरदन नदी में डुबकी लगाना निरी मूर्खता की बात प्रतीत हुई, उसी प्रकार, आज बहुतेरे लोगों को पापों से उद्धार पाने के लिए पानी में बपतिस्मा लेना निरी मूर्खता की बात लगती है। लेकिन दोस्तो, जैसे कि नामान प्रभु की आज्ञा माने बिना अपने कोढ़

को लिए हुए वापस चला गया, वैसे ही आज वे लोग जो प्रभु की आज्ञा को मानने से इन्कार कर रहे है अपना जीवन अपने पापों में ही व्यतीत कर रहे हैं। क्योंकि जैसे कि ऐलीशा ने नामान को आज्ञा देकर कहा था, कि अपने कोढ़ से चंगा होने के लिए तू जाकर यरदन के जल में सात बार डुबकी मार, वैसे ही आज हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह ने हमें आज्ञा देकर कहा है, कि यदि हम उस पर विश्वास करेंगे और बपतिस्मा लेंगे तो वह हमारा उद्धार करेगा। (मरकुस १६:१६)।

फिर, हम आगे यह भी देखते हैं, कि नामान स्वयं अपनी ही इच्छानुसार चंगा होना चाहता था, यानी वह पहिले से ही योजना बनाकर आया था कि उसे कैसे चंगा होना है। सो हम देखते हैं, कि जब प्रभु के जन ने उस से कहा कि तू यरदन को जा, तो उसने कहा, "कि मैंने तो सोचा था!" जी हाँ, उसने पहिले ही सोच रखा था कि उसे कैसे चंगाई पानी है, जैसे कि आज बहुतेरे लोग उद्धार तो पाना चाहते हैं परन्तु वे पहिले ही से सोच लेते हैं कि उन्हें उद्धार कैसे मिलेगा। लोग कहते हैं, कि उद्धार पाने के लिए एकमात्र विश्वास ही महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है; और वे इसी आधार पर मुक्ति पाना चाहते हैं। परन्तु मित्रो, नामान को पूर्ण विश्वास था कि वह अवश्य ही चंगा हो जाएगा, और जबकि ऐसा विश्वास बड़ा ही आवश्यक था, किन्तु क्योंकि विश्वास कामों से ही सिद्ध होता है (याकूब २:२२), इसलिए हम देखते हैं कि जब तक नामान ने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया वह एक कोढ़ी ही बना रहा। मित्रो, आपका और मेरा उद्धार इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप और मैं क्या सोचते हैं, किन्तु इस बात पर निर्भर करता है, कि क्या हम प्रभु की आज्ञा मानते हैं?

परन्तु आगे हम देखते हैं, कि नामान ने अपने आपको बुद्धिमान प्रमाणित करने के दृष्टिकोण से तर्क करके कहा कि "क्या दमिश्क की

अबाना और पर्पर नदियाँ इस्त्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं ? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं ?" सो हम क्या देखते हैं ? हम देखते हैं कि नामान का तर्क यह था, कि यदि यरदन के पानी में डुबकी मारकर वह चंगा हो सकता है, तो वह फिर किसी भी नदी में डुबकी मारकर चंगा हो सकता है। उसका कहना यह था, कि नदी तो एक नदी है, सो यदि यरदन का पानी उसे चंगा कर सकता है तो अन्य नदियों के पानी से भी वह अवश्य ही चंगा हो सकता है। उसने कहा, कि मेरे देश में अबाना और पर्पर नाम की नदियाँ बड़ी ही सुन्दर और बढ़िया हैं, और यरदन और इस्त्राएल की अन्य नदियों से कहीं अधिक बढ़कर हैं, सो यदि नदी में ही चंगाई है तो उसे अबाना और पर्पर के शीतल जल में प्राप्त करना अधिक उत्तम होगा !

जी हां, यह नामान का तर्क था, और आज बहुतेरे लोगों का यीशु मसीह की कलीसिया के बारे में बिल्कुल ऐसा ही तर्क है। जबकि बाइबल हमें बताती है, कि यीशु मसीह ने अपनी एक कलीसिया को बनाया (प्रेरितों २; मत्ती १६:१८), और वह उन सबको जो उसकी आज्ञा मानकर उद्धार प्राप्त करते हैं अपनी कलीसिया में मिलाता है (प्रेरितों २:४१, ४७), और इस कलीसिया या मण्डली को "मसीह की कलीसिया" कहा गया है (रोमियों १६:१६), क्योंकि मसीह ने अपना लोहू बहाकर अपनी कलीसिया को मोल लिया है (प्रेरितों २०:२८), और लिखा है कि मसीह एक दिन अपनी कलीसिया को लेने के लिए वापस आ रहा है (इफिसियों ५:२५-२७)। किन्तु लोग कहते हैं, कि कलीसिया कोई महत्वपूर्ण वस्तु नहीं है; और जैसे यरदन के बारे में नामान का तर्क था, सो वे कहते हैं कि चाहे कोई किसी भी कलीसिया में क्यों न हो सबका उद्धार होगा। परन्तु मित्रो, जैसे कि उस समय अबाना और पर्पर यरदन का स्थान नहीं ले सकती थीं, वैसे ही आज

कोई भी अन्य कलीसिया मसीह की कलीसिया का स्थान नहीं ले सकती। नामान को कोढ़ से शुद्ध होने के लिए उसी नदी में डुबकी मारनी थी जो उसे प्रभु ने बताई थी, और यदि हम आज उद्धार प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उसी कलीसिया में शामिल होना आवश्यक है जिसे यीशु मसीह ने बनाया है, भले ही अन्य कलीसियाएँ अबाना और पर्पर की तरह देखने में "सुन्दर" और "बढ़िया" प्रतीत हों, किन्तु उद्धार केवल मसीह की कलीसिया में ही है। क्योंकि मसीह ने अपनी कलीसिया को अपने लोहू से मोल लिया है (प्रेरितों २०:२८), और उसके लोहु से ही हमारा उद्धार होता है। (मत्ती २६:२८)।

किन्तु, फिर आगे इस विषय में हम देखते हैं, कि जब नामान परमेश्वर के भक्त की बात से क्रोधित होकर जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया तो मार्ग में उसके सेवकों ने उसकी मूर्खता का अहसास दिलाकर उससे कहा कि, "यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए।" सो लिखा है, कि "तब उसने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उसमें सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया।" अर्थात, उसने अपना मन फिराया और परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार उसकी आज्ञा मानी, और तब वह चंगा हो गया।

मित्रो, यह सम्भव है कि शायद अब तक आप परमेश्वर के वचन को और उसकी आज्ञाओं को सुनकर नामान की तरह टाल रहे हों; शायद आप उसके वचन को मूर्खता की बातें जानकर उनकी ओर कोई ध्यान न दे रहे हों। परन्तु जैसा कि हम देखते हैं, कि जब तक नामान का परमेश्वर के वचन के प्रति इस प्रकार का व्यवहार रहा वह एक कोढ़ी ही बना रहा—परन्तु जब उसने अपना मन फिराया और

परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया तो वह शुद्ध हो गया। इसलिए आज अपने जीवन में यदि कोई भी बड़ा और महत्वपूर्ण काम आप कर सकते हैं, तो वह यह है कि आप अपना मन फिराएं और परमेश्वर के वचन के अनुसार उसकी आज्ञा का पालन करें। और यदि आप ऐसा करेंगे तो वह अपनी प्रतिज्ञानुसार आपको सारे पापों से शुद्ध करेगा।

सो मेरी आशा है कि आप इन सब बातों पर अवश्य ही ध्यान देंगे। परमेश्वर हम सबको अपनी आज्ञाओं पर चलने के लिए बुद्धि और सामर्थ दे।

अविश्वास के कारण

मित्रो :

विश्व के इतिहास में प्रभु यीशु मसीह के अतिरिक्त केवल एक ही ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने अपने जीवन से सम्पूर्ण मानवता को कहीं न कहीं अवश्य प्रभावित किया है। उस व्यक्ति का नाम मूसा था। यद्यपि मूसा का जन्म यीशु मसीह के जन्म से लगभग पंद्रह सौ वर्ष पूर्व हुआ था, लेकिन मूसा के बारे में हमें अनेकों ऐसी बातें मिलती हैं जो बहुत सीमा तक प्रभु यीशु मसीह से मिलती-जुलती हैं। उदाहरण स्वरूप, जैसे कि हम पढ़ते हैं, कि जब मूसा का जन्म हुआ था तो उस समय मिस्र के राजा ने, इस उद्देश्य से कि इस्राएली बढ़कर इतने बलवन्त न हो जाएं कि मिस्र पर राज्य करने लगें, यह आज्ञा निकलवाई थी कि उनके यहाँ जितने भी लड़कों का जन्म हो उन्हें तत्काल मरवा दिया जाए। किन्तु जब यीशु मसीह का जन्म हुआ था तो यरुशलेम के राजा हेरोदेस ने आज्ञा दी थी कि उसके राज्य में दो वर्ष से कम की आयु के सभी लड़कों को मरवा दिया जाए, क्योंकि उसे पता चला था कि उसके राज्य में एक ऐसे बालक का जन्म हुआ है जो बड़ा होकर राज्य करेगा। परन्तु हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने मूसा और यीशु दोनों को राजा की तलवार से बचा लिया, क्योंकि वे दोनों परमेश्वर की ओर से एक विशेष काम करने के लिये उत्पन्न हुए थे। फिर, हम देखते हैं, कि मूसा के बारे में लिखा है, कि वह पृथ्वी भर के रहने-वाले सब मनुष्यों मे बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था (गिनती १२:३)। और इसी प्रकार मसीह के बारे में हम पढ़ते हैं, कि वह नम्र और मन में दीन था। (मत्ती ११:२९)। मूसा ने विश्वास दिलाने के लिये लोगों के बीच में बहुतेरे आश्चर्यजनक काम किए। और मसीह के

विषय में बाइबल का एक लेखक यूं कहता है, "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाश्रो।" (यूहन्ना २०:३०, ३१)।

इसी प्रकार, हम देखते हैं, कि परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने से पहले मूसा के सामने कई तरह की परीक्षाएं श्रौर लालच श्राए। एक जगह लिखा है कि "विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। श्रौर मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भन्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उसकी श्राँखें फल पाने की ओर लगी थीं।" (इब्रानियों ११ २४-२६)। श्रौर फिर मसीह के बारे में लेखक कहता है कि उसने, "उस श्रानन्द के लिए जो उसके श्रागे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा।" (इब्रानियों १२: २)। परमेश्वर की इच्छा से मनुष्य के पापों के कारण प्रायश्चित बनकर बलिदान होने से पहले यीशु को श्रनेकों तरह की परीक्षाश्रों का सामना करना पड़ा। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। (इब्रानियों ४: १५)।

मसीह के साथ मूसा की तुलना करते हुए हम इस विशेष बात को भी देखते हैं, कि जिस प्रकार परमेश्वर ने यीशु मसीह को संसार में इसलिए भेजा कि वह लोगों को उनके पापों से मुक्ति दिलाए। वैसे ही परमेश्वर ने मूसा को मिसर में इसलिए भेजा था कि वह इस्त्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर मुक्ति दिलाए। सो जिस प्रकार मसीह आज हमारा मुक्तिदाता है, वेसे ही मूसा उस समय उन लोगों

का छुड़ानेवाला बना। इसके अतिरिक्त, हम एक और खास बात यह देखते हैं, कि जैसे कि मूसा के द्वारा परमेश्वर ने उन लोगों को उस समय व्यवस्था अर्थात पुराना नियम दिया था, उसी प्रकार आज मसीह के द्वारा उसने हमें अपनी नई इच्छा अर्थात नया नियम दिया है।

किन्तु जबकि हम मूसा के बारे में इतनी अच्छी-अच्छी बातें पढ़ते हैं, और यहाँ तक कि हम देखते हैं कि कई बातों में उसकी तुलना मसीह के साथ की गई है, लेकिन तौभी एक बार जब मूसा ने परमेश्वर पर अविश्वास किया तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने उसे भारी दन्ड दिया। मूसा को परमेश्वर ने मिस्र में इसलिए भेजा था कि वह इस्त्राएलियों को मिसरियों के हाथ से छुड़ा लाए। परमेश्वर ने मूसा को इस्त्राएलियों का अगुवा बनाया, और उसके हाथ से मिस्रियों के बीच में सामर्थ के ऐसे बड़े-बड़े काम करवाए कि जिन्हें देखकर सारे मिसरी घबरा उठे, और उन्होंने इस्त्राएलियों को मूसा के साथ जाने की आज्ञा दे दी। परमेश्वर उन्हें एक ऐसे देश में ले जाना चाहता था जहाँ वे सुख और शान्ति से आज़ाद होकर रहेंगे। परन्तु परमेश्वर के विरुद्ध बातें करने और उस पर पूरा भरोसा न रखने के कारण, हम पढ़ते हैं, कि उन्हें चालीस बरस जंगलों में भटकना पढ़ा। और उसी समय की बात है, लिखा है :

"पहिले महीने में सारी इस्त्राएली मन्डली के लोग सीनै नाम जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहां मरियम (मूसा की बहन) मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी गई। वहां मन्डली के लोगों के लिए पानी न मिला; सो वे मूसा और हारुन के विरुद्ध इकट्ठे हुए। और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, कि भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए! और तुम यहोवा की मन्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहां मर जाएं? और तुम ने हम को मिस्र से

क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है ? यहाँ तो बीज, वा अंजीर, वा दाख लता व अनार, कुछ नहीं है, यहां तक की पीने को कुछ भी नहीं है। तब मूसा और हारून मन्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारुन समेत मन्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिए जल निकालकर मन्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले लिया। और मूसा और हारुन ने मन्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उन से कहा, हे दंगा करने वालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिए जल निकालना होगा ? तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी; और उस में से बहुत पानी फूट निकला, और मन्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। परन्तु मूसा और हारुन से यहोवा ने कहा, तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस मन्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे जिसे मैंनै उन्हें दिया है।" (गिनती २०: १-१२)।

मित्रो, वह मूसा जिसे परमेश्वर ने इस्राएल की अगुवाई करने को भेजा था; वह मूसा जिसके हाथ से परमेश्वर ने मिस्र और मिस्र के बाहर सामर्थ के अनेकों काम दिखाए; जी हां, वह मूसा जिसकी तुलना पवित्र बाइबल में परमेश्वर के पुत्र मसीह से की गई है, उसी से परमेश्वर ने कहा, कि तू इस मन्डली को उस देश में पहुंचाने न पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा मैंने की है, क्योंकि तूने लोगों की दृष्टि में मुझे पवित्र नहीं ठहराया ; क्योंकि तूने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है। मित्रो,

जब हम मूसा के बारे में सोचते हैं तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि चालीस बरस तक, रात और दिन जंगलों में घूम-घूमकर उसने इस उद्देश्य से उस मन्डली की अगुवाई की थी कि वह उसे उस देश में पहुंचाएगा जिसको देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उनसे की थी। कितनी ही बार मूसा ने अपने मन में उस सुन्दर देश की कल्पना की होगी; कितना अधिक प्रयत्न और परिश्रम उसने किया होगा। किन्तु, इतना सब कुछ करने के बाद भी जब उस ने यह सुना होगा, कि तू इस मन्डली को उस देश में पहुंचाने न पाएगा, तो कितना बड़ा धक्का उसे लगा होगा! लेकिन मैं आपको बता दूं, कि आज बहुतेरे लोग जो अपने आपको धर्मी और ईश्वर-भक्त समझते हैं न्याय के दिन ऐसी ही स्थिति में अपने आप को पाएंगे! क्या आप सुन रहे हैं?

क्या कभी आपने नहीं सुना, कि प्रभु यीशु ने कहा, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है?, "उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे;" यीशु ने कहा, "हे प्रभु, हे प्रभु. क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के कार्य नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा", उसने कहा, "कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती ७:२१-२३)। सो यहां हम क्या देखते हैं? अर्थात, यह कि चाहे हम उसके नाम से प्रार्थनाएं करें; प्रचार करें; और बहुत से काम करें, किन्तु यदि हम परमेश्वर की उस इच्छा पर नहीं चलते जो उसने पवित्र बाइबल में हमें दी है, तो हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करेंगे।

जी हां मूसा उस प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश न पा सका। परन्तु जानते हैं क्यों? इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहा, कि तूने मुझ पर विश्वास नहीं किया। परन्तु क्या मूसा परमेश्वर पर विश्वास नहीं

रखता था ? जी हां, वह अवश्य रखता था। परन्तु उस समय उसने अपने विश्वास का गला घोंट दिया जब उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, क्योंकि आज्ञा पालन बिना विश्वास उसी प्रकार मरा हुआ है जिस प्रकार कि देह आत्मा बिना। (याकूब २:२६)। परमेश्वर ने मूसा से कहा था, कि तू उस चट्टान से बोलना तो वह अपना जल देगी। परन्तु मूसा ने क्रोध में आकर चट्टान पर दो बार लाठी मारी, और इस प्रकार उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। और फलस्वरूप परमेश्वर ने उस से कहा कि तू उस देश में प्रवेश करने न पाएगा।

मित्रो, यदि आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं तो मूसा की इस बड़ी गल्ती से यह पाठ सीखिये, कि परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करके कोई भी मनुष्य उसके राज्य में प्रवेश न करने पाएगा। और उसके राज्य में प्रवेश करने के लिये परमेश्वर चाहता है, कि आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर दफन होकर मसीह में बपतिस्मा लें, और यूं मसीह में शामिल होकर उसी के वचन के अनुसार जीवन-भर चलते रहें। (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८; गलतियों ३:२७)।

परमेश्वर अपने वचनानुसार चलने के लिये आपको बुद्धि बा ताकत दे।

मार्ग के कारण

मित्रो :

मेरा विश्वास है कि आपको याद होगा कि पिछली बार हमने अपने अध्ययन में इस्राएली जाति के बारे में देखा था। हमने देखा था, कि किस प्रकार मूसा के द्वारा परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र देश की गुलामी में से निकाल लाया। और हमने इस बात को भी देखा था कि परमेश्वर उन्हें एक ऐसे देश में पहुंचाना चाहता था जहां दूध और मधु की धाराएं बहती थीं। परन्तु मार्ग में परमेश्वर और उसके दास मूसा का विरोध करने के कारण परमेश्वर ने उन्हें यह ताड़ना दी कि वे उस देश में प्रवेश करने से पहले चालीस वर्ष तक जंगलों में फिरते रहेंगे। यद्यपि उन चालीस वर्षों के भीतर परमेश्वर ने उनकी प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया, जैसे कि पिछले अध्ययन में हमने देखा था कि जब उन्हें जल की आवश्यकता पड़ी तो परमेश्वर ने एक चट्टान में से उन्हें जल निकालकर दिया; उनका पेट भरने के लिये परमेश्वर ने उन्हें मन्ना नाम का एक भोजन पदार्थ दिया। परन्तु वे उस से संतुष्ट न थे। उन्हें बार-बार वे फल और सब्ज़ियां, और मसाले याद आते थे जो उन्हें मिस्र में मिलते थे, जहां वे लोग गुलामी में रहते थे। और अपनी यात्रा के दौरान, उन वस्तुओं को याद कर करके वे लोग बार-बार परमेश्वर और उसके दास मूसा पर कुड़कुड़ाते थे, और कहते थे कि तुम हम लोगों को क्यों मिस्र से यहां मरने के लिये ले आए हो, भला होता कि हम मिस्र में हीं रहते। वे लोग अपनी आज़ादी के महत्त्व को नहीं जानते थे; वे उसकी कीमत को नहीं जानते थे; वे मूसा की तरह यह नहीं जानते थे कि मिसर के पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख

भोगना कहीं उत्तम है। (इब्रानियों ११:२४-२७)।

बाइबल में, गिनती की पुस्तक के २१ वें अध्याय में हमें इसी प्रकार की एक घटना के बारे में मिलता है, लिखा है, "फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया, कि एदोम देश के बाहर-बाहर घूमकर जाएं; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया। सो वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग हमको मिस्र से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहां न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुखित हैं। सो यहोवा ने उन लोगों में तेज़ विष वाले सांप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इस्त्राएली मर गए। तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, हमने पाप किया है, कि हमने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह सांपों को हमसे दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की। यहोवा ने मूसा से कहा, एक तेज़ विष वाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो सांप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब सांप के डसे हुओं में से जिस-जिस ने उस पीतल के सांप की ओर देखा वह जीवित बच गया।" (गिनती २१:४-९)।

यहाँ से हम देखते हैं, मित्रो, कि ये इस्त्राएली एक ऐसे देश में से निकलकर आए थे जहां ये लोग बन्धुवाई में थे; जहां उन्हें धार्मिक और सामाजिक दोनों ही तरह से कई प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता था। परन्तु परमेश्वर ने अपनी कृपा दृष्टि करके उन्हें वहां से निकाला। और अब वह उन्हें एक ऐसे देश में पहुंचाना चाहता था जहां दूध और मधु की धाराएं बहती थीं, अर्थात एक ऐसे देश में जो फलदायी और सुखदायी था, और जहां वे बिना किसी रोक-टोक

के परमेश्वर की उपासना वा भक्ति कर सकेंगे। परन्तु मार्ग में आने वाली छोटी-मोटी कठिनाइयों के कारण वे कुड़कुड़ाने लगे, और जिस परमेश्वर ने उन पर दया की थी, और जिस मूसा ने उन्हें गुलामी से छुड़ाकर आज़ाद किया था, वे लोग उन्हीं के विरुद्ध बातें करने लगे। और इसका कारण यह था कि उन लोगों का मन मार्ग के कारण व्याकुल होने लगा था। जी हां, "मार्ग के कारण!"

परन्तु मित्रो, क्या यही स्थिति आज हममें से बहुतेरे लोगों की नहीं है ? परमेश्वर ने हम सबके ऊपर अपनी अनुग्रह की दृष्टि करके हमारे पापों से हमें मुक्ति दिलाने के लिये अपने वचन को देहधारी बनाकर संसार में भेज दिया। वह, अर्थात् यीशु मसीह हम सबके पापों के कारण क्रूस के ऊपर मारा गया ताकि उसके द्वारा अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके हम उस स्वर्गीय देश में प्रवेश करें जहां हक़ीकी ज़िन्दगी है, अनन्त जीवन है। और हम सब, जिन्होंने यीशु मसीह और उसके सुसमाचार के ऊपर विश्वास किया है, और अपने पापों से मन फिराया है, और अपने पुराने जीवन को यीशु के साथ बपतिस्मे के द्वारा सदा के लिये गाड़कर मसीह को पहन लिया है, अब यीशु की अगुवाई में उस स्वर्गीय देश में प्रवेश पाने के लिये आगे की ओर बढ़ रहे हैं जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने विश्वासियों से की है।

परन्तु कितनी ही बार हम में से बहुतेरे उन इस्त्राएलियों की तरह अपना साहस और धैर्य छोड़ देते हैं। और कितने उन इस्त्राएलियों की तरह जो मिस्र को वापस लौटना चाहते थे अपने पुराने जीवन की ओर वापस लौट जाते हैं। जब मूसा की अगुवाई में वे इस्त्राएली मिस्र को छोड़कर निकले थे तो वे लोग आनन्द और उत्साह से भरपूर थे, परन्तु मार्ग में आनेवाली कठिनाईयों के कारण, और मार्ग के कारण उनका मन व्याकुल हो उठा और वे

मिस्र को याद करने लगे। किन्तु क्या यही बात आज भी बहुतेरे लोगों के भीतर नहीं है ? जी हाँ, आज बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो किसी समय मसीह के पीछे सब कुछ छोड़कर हो लिये थे, परन्तु मसीही-मार्ग में आनेवाली कठिनाईयों के कारण आज वे फिर उन्हीं वस्तुओं के पीछे चले गए हैं जिन्हें छोड़कर वे मसीह के पीछे आए थे। प्रेरित पतरस ऐसे लोगों के बारे में एक जगह यूँ कहता है : "और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और उनमें फंसकर हार गए, तो उनकी पिछली दशा पहली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है," लेखक कहता है, "कि कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटने के लिये फिर चली जाती है।" (२ पतरस २:२०-२२)।

उन इस्राएलियों के ऊपर विचार करते हुए, हमारा ध्यान इस बात पर भी जाता है, कि यद्यपि उनकी आवश्यकता अनुसार परमेश्वर ने उन्हें भोजन वा जल इत्यादि सब कुछ दिया था। परन्तु वे उन साधारण वस्तुओं से सन्तुष्ट न होकर उन वस्तुओं की लालसा करने लगे जिनका मज़ा वे लोग मिस्र में उड़ाते थे। परन्तु मित्रो, यदि हम परमेश्वर के मार्ग पर चलना चाहते हैं तो हमें उन वस्तुओं को अवश्य ही भूलना वा छोड़ना होगा जिनका सम्बन्ध मिस्र अर्थात पाप से है। प्रेरित पौलुस एक स्थान पर कहता है कि "क्या तुम नही जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तीपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६:९-१०)। सो यदि हम

परमेश्वर के मार्ग पर चलना चाहते हैं तो हमें उन्हीं वस्तुओं से संतुष्ट रहना होगा जिन्हें देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हम से की है।

मित्रो, इसमें कोई संदेह नहीं कि मसीही मार्ग एक सकड़ा मार्ग है, और बहुतेरे इस मार्ग के कारण व्याकुल और परेशान हो उठते हैं और घबराकर वापस लौटना चाहते हैं, परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि अनंत जीवन को पहुंचानेवाला केवल यही एक मार्ग है। और इस मार्ग से भटकना जीवन के उद्देश्य से भटकना है, इस मार्ग को छोड़ना परमेश्वर के मार्ग को छोड़ना है। क्योंकि मसीह हमारे लिये मारा गया ताकि हमें हमारे पापों से मुक्त कराके परमेश्वर के उस स्वर्गीय राज्य में पहुंचाए जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने लोगों से की है।

परन्तु, मित्रो, हम देखते हैं, कि सारे के सारे इस्राएली परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश न पा सके क्योंकि उन्होंने पाप किया था और वे मार्ग में ही नाश हो गए। और पवित्र बाइबल एक स्थान पर कहती है कि "ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें। और न तुम मूरत पूजने वाले बनो; जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, कि लोग खाने-पीने बैठे, और खेलने-कूदने उठे। और न हम व्यभिचार करें; जैसा उनमें से कितनों ने किया, और एक दिन में तेईस हज़ार मर गए। और न हम प्रभु को परखें; जैसा उनमें से कितनों ने किया, और सांपों के द्वारा नाश किए गए। और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए गए। परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं, और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई हैं।" (१ कुरिन्थियों १०:६:११)।

सो यदि आज आप यीशु मसीह में नहीं हैं तो आप अभी तक मिस्र में हैं। आपको चाहिये कि आप उस बन्धुवाई में से निकल आएं

और परमेश्वर के उस मार्ग पर चलें जो जीवन को पहुंचाता है। आपको चाहिये कि आप यीशु मसीह में विश्वास करें कि परमेश्वर ने आपके छुटकारे के लिये उसे दे दिया; और आपको चाहिए कि आप अपने सारे पापों से मन फिराकर यीशु मसीह में बपतिस्मा लेकर उसे पहिन लें, अर्थात उसके भीतर हो जाएं।

परन्तु यदि आप मसीह में हैं, या उसके भीतर होने का निश्चय कर रहे हैं, तो फिर मिस्र की तरफ वापस मुड़कर न देखें, परन्तु जैसे कि पवित्र बाइबल में लिखा है कि, "विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिये उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो" क्योंकि "तुमने पाप से लड़ते हुए उस से ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। (इब्रानियों १२:२-४)।

प्रभु यीशु मसीह ने हमें पाप के दासत्व से छुड़ाकर आज़ाद करने के लिये अपनी जान दी और अपना लोहू बहाया, ताकि हम उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें। क्या आप उस पर विश्वास लाने और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिये तैयार हैं ?"

परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको ताकत दे।

“क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता”

मित्रो :

यदि परमेश्वर मुझे बोलने की ताकत न देता तो आज उसका वचन इस प्रकार लाखों लोगों तक मैं कदापि न पहुंचा पाता। और यदि परमेश्वर आपको सुनने की शक्ति न देता तो आज इन बहुमूल्य बातों को सुनने से आप वंचित रह जाते जिन्हें अभी मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं। सो हमें कितना अधिक उस महान परमेश्वर का धन्यवादी होना चाहिए जिसने हमें अनेकों अन्य आशीषों के साथ-साथ बोलने और सुनने की सामर्थ भी दी है। वचन या शब्द में वास्तव में बड़ी ही शक्ति है। जैसे कि हम कई बार लोगों को यह कहते भी सुनते हैं, कि आवाज़ में ताकत है—और यह सच है! परन्तु हमने आज अपनी आवाज़ को रेडियो, टेलीविज़न, और टेलीफ़ोन जैसे यन्त्रों की सहायता से और भी अधिक शक्तिशाली बना लिया है। किन्तु चाहे जो कुछ भी हो, हमारी ताकत सीमित है। उदाहरण स्वरूप, हम दिन के उजाले में खड़े होकर अपने वचन की ताकत से दिन को रात नहीं कर सकते और रात के अन्धरे का दिन का उजाला नहीं बना सकते।

परन्तु आज हम परमेश्वर के वचन के बारे में देखेंगे, जिसकी तुलना पवित्र बाइबल में एक स्थान पर भस्म कर देनेवाली आग से और पत्थर को पीस देनेवाले हथौड़े से की गई है। अर्थात वह इतना सामर्थी है कि उसकी शक्ति को समझना हमारी कल्पना से भी परे है, और हम सोचने लगते हैं, कि ऐसा कैसे हो सकता है? कितनी

ही बार शायद हमने सोचा होगा कि इतनी बड़ी अद्भुत सृष्टि की रचना परमेश्वर ने कैसे की होगी ? परन्तु हम अपने तर्क और बुद्धि के आधार पर इस प्रश्न को समझने में हमेशा असमर्थ रहते हैं। हम केवल इतना ही जानते हैं, कि पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने अपने वचन की सामर्थ से इस सृष्टि को रचा है।(उत्पत्ति १)। इब्रानियों की पत्री का लेखक एक जगह कहता है कि "विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है।" (इब्रानियों ११:३)। अर्थात् परमेश्वर ने कहा, और वैसा ही हो गया। निसंदेह, यह हमारी समझ के बाहर है, परन्तु यह सच है, क्योंकि लिखा है, कि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता।

जब हम प्रभु यीशु मसीह के जन्म से सम्बन्धित विवरण को बाइबल में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं, कि जब गलील के नासरत नाम के एक नगर में मरियम नाम की एक कुंवारी के पास एक स्वर्गदूत ने आकर उसे परमेश्वर का यह संदेश दिया, कि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है, और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना; वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा, और लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। (मत्ती १; लूका १)। तो लिखा है, कि मरियम ने स्वर्गदूत से कहा कि "यह क्योंकर होगा ?" मरियम जानती थी, कि ऐसा कभी नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होना बिल्कुल असम्भव बात थी। परन्तु आगे हम पढ़ते हैं कि "स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; कि पवित्रात्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा···क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता।" (लूका २:३४-३७)।

क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं ? क्या आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं ? क्या आप उसके वचन पर विश्वास करते हैं ? क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं, कि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता ? आज इतने बड़े विश्वास की संसार में कितनी अधिक आवश्यकता है ! बहुतेरे लोग आज परमेश्वर के वचन को सुनकर उसकी कोई परवाह नहीं करते। वे उसकी आज्ञाओं को मूर्खता की बातें समझते हैं, और उन्हें मानने के विपरीत वे उनका हंसी वा ठट्ठा उड़ाते हैं। किन्तु, क्यों ? इसलिये, क्योंकि वे इस बात पर विश्वास नहीं करते कि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता। और इस बात पर वे इसलिये नहीं विश्वास करते क्योंकि वे स्वयं परमेश्वर पर वास्तव में विश्वास नहीं करते। आपको याद होगा, कि अपने एक पिछले अध्ययन में हमने मूसा के बारे में देखा था। हमने देखा था, कि मूसा को परमेश्वर ने आज्ञा देकर कहा था कि तू चट्टान से बोलना और उसमें से तुम्हारे लिये जल निकलेगा। किन्तु, हम देखते हैं, कि इसके विपरीत, अर्थात चट्टान से बोलने के विपरीत, उसने चट्टान पर लाठी मारी। और परमेश्वर ने मूसा और उसके भाई हारुन से कहा, कि तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया! (गिनती २०:१२)। सो यदि हम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते, तो इससे हम यह प्रगट करते हैं कि हम वास्तव में उस पर विश्वास नहीं करते।

परन्तु इस प्रकार मूसा ने न केवल परमेश्वर की आज्ञा को ही बदला, किन्तु हम यह भी देखते हैं कि इस्त्राएलियों की ओर देखकर उसने कहा कि "क्या हमको इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा ?" (गिनती २०:१०)। परन्तु मित्रो, क्या मूसा के पास इतनी शक्ति थी कि वह उस चट्टान में से उन लोगों के लिये जल निकाल पाता ? या क्या उसके पास इतनी सामर्थ थी कि वह उन

लोगों की इतनी बड़ी मण्डली को फिरौन के शक्तिशाली हाथों से छुड़ाता ? जब परमेश्वर ने मूसा को इस्त्राएलियों को छुड़ाने के लिये मिस्र में भेजा था, तो उस समय वह भय से कांप रहा था; क्योंकि वह जानता था कि वह स्वयं इस बड़े काम को कभी नहीं कर सकता। क्योंकि कहाँ था शक्तिशाली फिरौन और कहाँ भेड़-बकरियां चरानेवाला ग़रीब मूसा। परन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा था, कि तू जा, मैं तेरे संग हूं, मेरी सामर्थ तेरे साथ है। किन्तु यहां, हम देखते हैं, कि मूसा उन लोगों से कहता है, कि क्या हमको इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा ?

अनेकों बार हम अपने जीवनों में परमेश्वर को पहिले न रखकर स्वयं अपने आपको पहिले रखते हैं। जहां परमेश्वर को श्रेय, आदर और बड़ाई मिलनी चाहिए उसे हम स्वयं अपने ऊपर लेने का विचार करते हैं। और कई बार तो यह कहने के विपरीत कि हम केवल वही करेंगे जो परमेश्वर का वचन हमसे कहता है, हम सोचने लगते हैं कि जो हम कहते या चाहते हैं परमेश्वर को वही करना चाहिए। अर्थात विपरीत इसके कि हम परमेश्वर के वचन की अगुवाई में चलें हम परमेश्वर की अगुवाई करना चाहते हैं। मित्रो, क्यों नहीं आज हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते ? क्या इसलिये क्योंकि परमेश्वर पूर्वकाल की तरह आज लोगों को तत्काल दण्ड नहीं देता ? जैसे कि हम देखते हैं कि जब इस्त्राएलियों ने पाप किया था तो परमेश्वर ने उनके बीच में तेज़ विषवाले सांप भेजे थे, और जब उनमें से बहुतेरे मरने लगे तो वे प्रार्थना करने लगे कि परमेश्वर उन्हें क्षमा कर दे और सांपों को उनके बीच में से हटा ले। परन्तु यद्यपि आज परमेश्वर हमें उस समय की तरह तत्काल दण्ड नहीं देता है, तौभी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह अपने वचन के द्वारा प्रत्येक मनुष्य का न्याय करेगा। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि, "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं

ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है, अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना १२:४७, ४८)।

सो इस प्रकार, हम देखते हैं, कि परमेश्वर का वचन प्रभावशाली और सामर्थपूर्ण है; उसके वचन के द्वारा सारी सृष्टि की रचना हुई है; और उसी का वचन एक दिन प्रत्येक मनुष्य का न्याय करेगा। परन्तु परमेश्वर के वचन के सम्बन्ध में एक और बड़ी ही महत्वपूर्ण बात के बारे में हमें बाइबल में इस प्रकार मिलता है, लिखा है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।" (यूहन्ना १:१-३)। अब यहां हम देखते हैं कि वचन को परमेश्वर के समान और स्वयं परमेश्वर कहा गया है। किन्तु, इतना ही नहीं, आगे लिखा है, "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १:१४)।

सो वह सामर्थपूर्ण वचन, जो आदि में परमेश्वर के साथ था, देहधारी हुआ, अर्थात वह मनुष्य बना, और मनुष्यों के बीच में रहा। और ऐसा इस कारण हुआ, बाइबल बताती है, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है और वह उसे पाप में नाश होने से बचाना चाहता है। और इसलिये उसने अपने प्रभावशाली वचन को देहधारी बनाकर मनुष्य अर्थात यीशु मसीह के रूप में संसार में भेज दिया। यही कारण है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र कहलाता है। परमेश्वर की

इच्छा तथा ज्ञान के अनुसार जब समय पूरा हुआ तो उसने यीशु को मनुष्यों के हाथों से एक क्रूस के ऊपर चढ़वाकर मरवा डाला। परन्तु यीशु क्योंकि मनुष्य मात्र ही न था बल्कि वह परमेश्वर का सामर्थपूर्ण वचन था, इस कारण वह मृत्यु पश्चात तीसरे दिन फिर जी उठा। और इस तरह परमेश्वर के प्रभावपूर्ण वचन ने हमारे उद्धार के काम को पूरा किया।

उसी वचन अर्थात यीशु ने स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने से पूर्व मनुष्यों से कहा, कि जो उसमें विश्वास करेगा, और अपना मन पापों से फिराएगा, और बपतिस्मा लेकर उसकी मृत्यु और उसके जी उठने की समानता में हो जाएगा वह मनुष्य इस कारण उसके द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करेगा। (लूका २४:४६, ४७; प्रेरितों २:३८; रोमियों ६:३, ४)।

क्या आप परमेश्वर के सामर्थपूर्ण वचन पर विश्वास करते हैं ? क्या आप उसके वचन को मानने के लिये तैयार हैं ? मित्रो, परमेश्वर का वचन केवल हमारा उद्धार ही नहीं करता है, परन्तु वह एक दिन हम सबका न्याय भी करेगा।

सो मेरा विश्वास है, कि आप इन बातों के ऊपर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। और मेरी प्रार्थना है, कि परमेश्वर अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आपको शक्ति दे।

परमेश्वर ने दिया है, क्या आप लेने को तैयार हैं ?

मित्रो :

मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बड़ा ही अधिक महत्व है। हम उस समय की प्रतीक्षा बड़े ही उत्सुक होकर करते हैं जब हमारे बच्चे स्कूल जाने की आयु के हो जाते हैं। हम हर प्रकार का प्रयत्न और परिश्रम करके उन्हें स्कूल भेजना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि शिक्षा उनके जीवन के लिये बड़ी ही आवश्यक वस्तु है। परन्तु शिक्षा की आवश्यकता न केवल बालकों को ही होती है, किन्तु शिक्षा हर एक मनुष्य के लिये बड़ी ही आवश्यक वस्तु है। हम देखते हैं, कि एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४:४)। फिर नए नियम में एक अन्य स्थान पर प्रेरित पौलुस कहता है, कि "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।" (रोमियों १५:४)। यहां उसका अभिप्राय पहिले से लिखी गई उन बातों से है जिनके बारे में हम पुराने नियम, अर्थात बाइबल के पहिले भाग में पढ़ते हैं। पुराने नियम में लिखी बातों से यूं तो हमें बहुतेरी बड़ी अच्छी-अच्छी महत्वपूर्ण शिक्षाएं मिलती हैं, जैसे कि हम आदम तथा हव्वा के जीवनों से सीखते हैं कि हम उनकी तरह ढिठाई करके परमेश्वर की आज्ञाओं को न तोड़ें। फिर हम कैन और हाबिल के द्वारा सीखते हैं, कि हमें परमेश्वर की उपासना उसके दिये हुए नियमों के अनुसार ही करनी चाहिए। इसी प्रकार, हम नूह के जीवन

स भी सीखते हैं, कि हमें परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा का पालन उसके कहे अनुसार ही करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पुराने नियम में हम इब्राहीम, शाऊल, दाऊद और सुलैमान जैसे व्यक्तियों के बारे में भी पढ़ते हैं, जिनके जीवनों से हमें अनेकों अच्छी-अच्छी तथा महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ मिलती हैं।

परन्तु पुराने नियम में यदि किसी के बारे में भी सबसे अधिक हमें मिलता है, तो वह स्वयं इस्राएल जाति है। इस्राएल, अर्थात् परमेश्वर की सामर्थ! इस जाति को परमेश्वर ने मसीह से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व एक बड़े ही विशेष उद्देश्य के लिए चुना था। अर्थात् उसके द्वारा अपनी सामर्थ को सभी मनुष्यों पर प्रगट करने के लिए, और मुख्यत: अपने पुत्र, हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु को इस संसार में लाने के लिए। परन्तु इन इस्राएली लोगों के चरित्र से हम आज भी अनेकों महत्त्वपूर्ण पाठ सीखते हैं। जिस प्रकार हमने अपने पिछले पाठों में देखा था, कि ये लोग जब मिस्र में दासत्व में थे तो परमेश्वर उन्हें उस बन्धुवाई में से निकालना चाहता था। और इस बड़े काम का करने के लिए उसने मूसा को उनके बीच में भेजा। परमेश्वर उन्हें उस बन्धुवाई में से निकालकर जिसमें वे नाश हो रहे थे एक ऐसे सुन्दर देश में पहुंचाना चाहता था जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती थीं। हम देखते हैं कि बड़ी ही अद्‍भुत रीति से परमेश्वर ने उन्हें मिस्त्रियों के शक्तिशाली हाथों से छुड़ाया; और कुछ ही समय पश्चात वे उस देश के पास भी पहुंच गए जो वह उन लोगों को देना चाहता था। किन्तु, मित्रो, जैसा कि हम पढ़ते हैं, कि यद्यपि परमेश्वर अपनी सामर्थ से उन्हें उस सुन्दर देश के पास तक ले आया, और वह उसे उन्हें देने के लिए तैयार था परन्तु वे लोग परमेश्वर की आशीष लेने के लिए तैयार न थे, क्योंकि उनमें अविश्वास था, वे डरते थे, उन्हें परमेश्वर पर भरोसा न था। आज मैं आपके सामने बाइबल में से गिनती की पुस्तक के तेरहवें तथा चौदहवें अध्यायों में से उस जगह से पढ़ूंगा, जहाँ हम

देखते हैं, कि जब वे लोग प्रतिज्ञा किए उस देश के निकट पहुंच गए तो मूसा ने उनमें से बारह पुरुषों को चुनकर उन्हें उस का भेद लेने को भेजा। चालीस दिन के बाद वे लोग उस देश का भेद लेकर जब लौटे, तो लिखा है, "उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, कि जिस देश में तूने हमको भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है। परन्तु उस देश के निवासी बलवान् हैं, और उसके नगर गढ़ वाले और बहुत बड़े हैं; और फिर हमने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा। दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में हित्ती, यबूसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे-किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं। पर कालेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने की मनसा से कहा, हम अभी चढ़के उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निसंदेह हम में ऐसा करने की शक्ति है। पर जो पुरुष उसके संग गए थे उन्होंने कहा, उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान हैं। और उन्होंने इस्त्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, कि वह देश जिसका भेद लेने को हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने उस में देखे वे सब के सब बड़े डील-डौल के हैं। फिर हम ने वहां नपीलों को अर्थात नपीली जातिवाले अनाक-वंशियों को देखा, और हम अपनी दृष्टि में तो उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।"

सो आगे हम पढ़ते हैं, कि "तब सारी मन्डली चिल्ला उठी, और रात भर वे लोग रोते ही रहे। और सब इस्त्राएली मूसा और हारुन पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मन्डली उनसे कहने लगी,

कि भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते ! वा इस जंगल ही मे मर जाते ! और यहोवा हमको उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है ? हमारी स्त्रियां और बालबच्चे तो लूट में चले जाएंगे ; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएं ? फिर वे आपस में कहने लगे, आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें। तब मूसा और हारून इस्राएलियों की सारी मन्डली के सामने मुँह के बल गिरे। और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश का भेद लेनेवालों में से थे, अपने-अपने वस्त्र फाड़कर, इस्राएलियों की सारी मन्डली से कहने लगे, कि जिस देश का भेद लेने को हम इधर-उधर घूमकर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है। यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, पहुंचाकर उसे हमें दे देगा। केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न तो उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उन से न डरो। तब सारी मन्डली चिल्ला उठी, कि इनको पत्थरवाह करो। तब यहोवा का तेज सब इस्राएलियों पर प्रकाशमान हुआ।"

लिखा है, "फिर यहोवा ने मूसा और हारुन से कहा, यह बुरी मन्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक सहता रहूं ? इस्राएली जो मुझ पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना, मैं ने तो सुना है। सो उन से कह कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, निसंदेह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करुंगा। तुम्हारी लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी और तुम सब में से बीस वर्ष की वा उस से अधिक अवस्था के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते थे, उन में

से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशु को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय में मैंने शपथ खाई है कि तुम को उस में बसाऊंगा। परन्तु तुम्हारे बाल बच्चे जिनके विषय में तुमने कहा है, कि ये लूट में चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुंचा दूँगा; और वे उस देश को जान लेंगे जिसको तुम ने तुच्छ जाना है। परन्तु तुम लोगों कि लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी। और जब तक तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बालबच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे, अर्थात चालीस दिन, उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे एक वर्ष, अर्थात चालीस वर्ष तक तुम अपने अधर्म का दन्ड उठाए रहोगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है।"

मित्रो, जैसा कि इस सम्बन्ध में हम आगे देखते हैं, कि परमेश्वर के कहे अनुसार, वास्तव में, यहोशू और कालिब को छोड़ इस्राएलियों में से कोई भी अन्य व्यक्ति, जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा न रखा, उस देश में प्रवेश न कर पाया जिसे परमेश्वर ने उन्हें दे दिया था। परन्तु यह बात आज हम सबके लिये कितनी अधिक शिक्षाप्रद है। परमेश्वर उन्हें दासत्व में से निकाल लाया; वे उस देश के बिलकुल निकट पहुंच गए जिसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उन से की थी। किन्तु, जब वे उसके भीतर प्रवेश करने पर थे तो उन्हों ने अपना साहस छोड़ दिया; वे डर गए; उन्होंने अपना भरोसा परमेश्वर पर से हटा लिया, और फलस्वरुप वे सब के सब उस जंगल में ढेर हो गए।

परन्तु आज आप कहां है? क्या आप पाप के दासत्व में हैं ? या क्या आप परमेश्वर में अपने अविश्वास के कारण जंगल में भटक रहे हैं ? परमेश्वर आपको यीशु में अनन्त जीवन देना चाहता है;

वह चाहता है कि आप उसके स्वर्गीय देश में प्रवेश करें। किन्तु क्या आप उस में प्रवेश करने के लिये तैयार हैं? प्रभु यीशु ने कहा, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना ३ : ५)। मित्रो, परमेश्वर चाहता है कि आप उसके पुत्र मसीह यीशु में विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराकर जल में अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। वह आपको मुक्ति देने के लिये तैयार है। क्या आप उसे प्राप्त करने के लिये तैयार हैं?

इस सम्बन्ध में हम अपने अगले पाठ में कुछ और बातों के ऊपर विचार करेंगे, तब तक के लिए मैं आपसे आज्ञा चाहूंगा। परमेश्वर आप सबको आशीष दे।

मिस्र में, जंगल में, या पहाड़ी देश में?

मित्रो :

मुझे बड़ी ही खुशी है इस बात से कि हम एक बार फिर परमेश्वर के वचन में से देखने के लिये एकत्रित हैं। जैसा कि आप जानते हैं, कि कुछ समय से हम उन इस्त्राएलियों के बारे में देखते आ रहे हैं जिन्हें परमेश्वर ने मिस्र के दासत्व से छुड़ाया था और उनसे प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें एक ऐसे सुंदर देश में पहुंचाएगा जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं। इस्त्राएली मिस्त्र में दासत्व के घर में थे,वे वहाँ गुलाम थे। जिस प्रकार से आज प्रत्येक मनुष्य पाप के दासत्व में है। परन्तु परमेश्वर इस्त्राएलियों को दासत्व से छुड़ाकर आज़ाद करना चाहता था, और इसी उद्देश्य से उस ने उन के बीच में मूसा को भेजा। जिस प्रकार वह हमें पाप के दासत्व से आज़ाद कराना चाहता है और हमें छुड़ाने के लिये उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को संसार में भेजा। परन्तु हम देखते हैं, कि इस्त्रालियों ने मिस्त्र छोड़कर अभी उस देश की ओर बढ़ना आरम्भ ही किया था, कि उनके सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई आ खड़ी हुई। और वह कठिनाई थी, लाल समुद्र जिसे पार करना आगे बढ़ने के लिये बहुत आवश्यक था। हम देखते हैं, कि इतनी बड़ी मुसीबत को सामने देखकर इस्त्राएली घबरा उठे, और उन्हें अपने जीवनों का भय लगने लगा। परन्तु मूसा ने उनसे कहा, कि घबराओ नहीं, परन्तु परमेश्वर का उद्धार देखो। और परमेश्वर के कहने पर मूसा ने अपनी लाठी उठा ली और अपना हाथ लाल समुद्र की ओर बढ़ाया। तब लिखा है, कि समुद्र दो भागों में बंट गया और सारे इस्त्राएली सूखी भूमी में से होकर समुद्र के बीच में से निकल गए।

इस बात से हमारा ध्यान उन लोगों के ऊपर जाता है, जो मसीही जीवन में प्रवेश करते ही अपने सामने किसी न किसी कठिनाई को खड़ा पाए देखते हैं, और वे घबरा जाते हैं। वे वापस लौटना चाहते हैं। उन्हें अपने ऊपर क्रोध आने लगता है कि उन्हों ने मसीह की कलीसिया में प्रवेश ही क्यों किया। परन्तु मित्रो, जिस परमेश्वर ने उन इस्त्राएलियों को फ़िरौन के हाथ से छुड़ाया, और दासत्व में से बाहर निकाला, उसी ने उनको लाल समुद्र से भी पार कराया। इसलिये आज जब हम सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लेते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि हम उस प्रभु की अगुवाई में आगे बढ़ रहे हैं जो न केवल हमें पाप के दासत्व मे ही छुटकारा दिला सकता है, परन्तु वह हमें मार्ग में आनेवाली प्रत्येक कठिनाई और जोखिम से भी पार करा सकता है। हमें उस पर विश्वास रखना चाहिए, और उसकी सामर्थ पर भरोसा रखना चाहिए।

परन्तु यद्यपि उन लोगों ने दासत्व से मुक्ति प्राप्त कर ली, और वे लाल समुद्र के भी पार आ गए, किन्तु हम देखते हैं, कि उस पहाड़ी देश की ऊंचाई पर पहुंचने के विपरीत, जहां परमेश्वर उन्हें ले जाना चाहता था, वे जंगलों में भटक रहे थे! हम देखते हैं, कि वे वहां एक लम्बे समय तक भटकते फिरे, और बहुतेरे उन में से वहीं पर नाश हो गए! किन्तु, आज हम में से बहुतेरे लोगों की हालत यही है। हमने मसीह पर विश्वास किया है, उसकी आज्ञाओं को माना है, और इस प्रकार पाप के दासत्व से छुटकारा प्राप्त करके हम उसके पीछे हो लिये हैं। परन्तु मसीही जीवन के आनन्द की ऊंचाई पर पहुंचने के विपरीत, हम अभी तक जंगल में भटक रहे हैं। हमें मसीही जीवन और पूर्व जीवन में कोई विशेष अंतर नहीं दिखाई देता। आनन्द और उल्लाहस के विपरीत हमें अपना जीवन नीरस तथा खोखला लगता है। परन्तु यदि आपकी यही स्थिति है, तो मैं आपको बता देना चाहता हूं, कि आपको इस बात की आवश्यकता है,

कि आप उस जंगल को छोड़कर उस में से निकल आएं, और मसीही जीवन की उस ऊंचाई पर पहुंचने का प्रयत्न करें जहां आपको वास्तव में होना चाहिए। क्योंकि पाप के जंगल में रहते हुए हम मसीही जीवन का आनन्द कदापि प्राप्त नहीं कर सकते।

परन्तु, आईये, अब हम इस बात के ऊपर विचार करें कि दासत्व में से निकल आने के बाद वे लोग जंगल में क्यों नाश हुए? निसंदेह, इसका मुख्य कारण उनका अविश्वास था। उन्हें परमेश्वर पर भरोसा न था। जैसे कि अपने पिछले पाठ में हम ने देखा था, कि जब वे मिस्त्र से निकलने के तुरन्त बाद प्रतिज्ञा किए देश के निकट पहुंचे, तो मूसा ने उन में से बारह पुरुषों को चुनकर उन्हें उस देश का भेद लेने को भेज। परन्तु जब वे लौटकर आए तो हम देखते हैं कि यहोशू और कालिब को छोड़ उन में से अन्य सभी डर के मारे थरथरा रहे थे। किन्तु, किस कारण? इसलिये, क्योंकि वे कहते थे, कि उस देश में बड़े-बड़े डील-डौल के दानव हैं और हम उनके सामने टिड्डियों के समान लगते हैं, वे हमें खा जांएगे, हमें चट कर जाएंगे। वे इस बात को भूल गए थे कि उन्हें उस देश में पहुंचाने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। वे उस देश में अपनी सामर्थ से नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से प्रवेश करने जा रहे थे। परमेश्वर उस देश को उनके हाथ में कर देना चाहता था। परन्तु वे उसे लेने के लिये तैयार न थे। क्योंकि वे उन बड़े बड़े डील-डौल वाले दानवों से डरते थे।

मित्रो, हम में से बहुतेरे आज मसीही जीवन की उस ऊंचाई पर नहीं पहुंच पाते जहां वास्तव में हमें होना चाहिए, क्योंकि हमारे जीवनों में कहीं न कहीं कोई दानव छिपा बैठा है। कुछ लोगों की जीवन में अयोग्यता का दानव है। वे ऊपर उठ सकते हैं, उंचाई तक पहुंच सकते हैं, परन्तु वे अपने आप को अयोग्य जानकर पीछे रह जाते हैं। यह बात

हम मूसा के आरम्भ के जीवन में देखते हैं । जब परमेश्वर ने उसे मिस्त्र में जाकर इस्त्राएलियों को छुड़ा लाने की आज्ञा दी । तो यह जान लेने के बाद भी कि परमेश्वर मेरी सहायता और अगुवाई करेगा, मूसा ने कहा, कि मैं इस काम को करने के योग्य नहीं हूं । परन्तु मित्रो, परमेश्वर हमें उद्धार और विजय हमारी अपनी योग्यता के फलस्वरुप नहीं परन्तु अपनी ही सामर्थ के द्वारा देता है । हमें अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं रखना चाहिए, हमे अपनी अयोग्यता से डरना वा घबराना नहीं चाहिए । परन्तु हमें अपने परमेश्वर की सामर्थ के ऊपर विश्वास या भरोसा रखना चाहिए ।

फिर, कुछ लोगों में, मसीही जीवन में उन्नति न करने का कारण, भय है । अर्थात, उनके जीवन में भय का दानव है । वे मसीह के पीछे चलने से डरते हैं । उन्हें लगता है कि मसीह के पीछे चलने के कारण कहीं उन्हें कोई हानि न उठानी पड़े । वे डरते हैं, कि कहीं मसही के कारण उनके मित्र वा सम्बन्धि उनसे नाराज़ न हो जाएं । उन्हें भय लगता है, कि मसीह के पीछे हो लेने के कारण कहीं उन्हें अपने परिवार और समाज के लोगों के विरोध का सामना न करना पड़े । वे डरते हैं, कि मसीह में होने के कारण कहीं लोग उनका हंसी वा ठट्ठा न करने लगें । बहुतेरे मसीह की गवाही देते हुए डरते हैं । ऐसे बहुतेरे काम हैं जो हम मसीह की कलीसिया की उन्नति के लिये कर सकते हैं । परन्तु हम डरते हैं, और कहते हैं, कि हम यह काम नहीं कर सकते । प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, कि जो मुझे सामर्थ देता है, अर्थात मसीह, उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं । सो यदि आप मसीही जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं ; यदि आप ऊंचाई पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं ; तो आपको यह निश्चय होना चाहिए कि मसीह के भीतर आप जयवन्त से भी बढ़कर हैं ।

परन्तु, इसके अतिरिक्त, हम एक और ऐसे दानव के बारे में देखते हैं,

जो लोगों को आत्मिक जीवन में, और परमेश्वर के राज्य में बढ़ने से रोकता है, और उसे हम परीक्षा या लालच का दानव कह सकते हैं। जिस प्रकार हमने इस्त्राएलियों के बारे में देखा था, कि यद्यपि वे प्रतिज्ञा किए देश की ओर बढ़ रहे थे, किन्तु उन्हें बार-बार मिस्त्र की वस्तुएँ याद आती थीं, और वे वापस लौटना चाहते थे। आज अनेकों लोग अपने जीवनों में आनेवाली परीक्षाओं के कारण परमेश्वर के मार्ग पर आगे बढ़ने के विपरीत पीछे की ओर लौट रहे हैं। क्योंकि वे परीक्षाओं का सामना करने में अपने आपको असमर्थ समझते हैं। मित्रो, शैतान नहीं चाहता कि आप अपने आत्मिक जीवन में उन्नति करें। वह नहीं चाहता, कि आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करें; और अनन्त जीवन पाएं। इसीलिए वह नाना प्रकार की परीक्षाएं आपके सामने लाता है, ताकि आप मार्ग में ही रुक जाएं और वापस लौट जाएं। प्रेरित पतरस बाइबल में एक जगह कहता है, "सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता, है, कि किसको फाड़ खाए।" (१ पतरस ५:८)।

किन्तु मित्रो, हमारे जीवन में चाहे किसी प्रकार का भी दानव क्यों न हो, हमें चाहिए कि हम कालिब की तरह बनें। आपको याद होगा, कि जब वे बारह पुरुष उस देश का भेद लेकर आए थे तो, उन्होंने कहा था, कि हम उस देश को नहीं ले सकते क्योंकि उस देश में बड़े-बड़े डील-डौल के दानव हैं; और हम उनके सामने टिड्डे के समान हैं। किन्तु कालिब ने उनसे कहा था, कि नहीं, परन्तु क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है, इसलिये हम नहीं, परन्तु वे दानव हमारे सामने टिड्डे के समान हैं! यहाँ हम देखते हैं, कि जबकि वे लोग उन दानवों को मनुष्य के दृष्टिकोण से देख रहे थे; कालिब ने उन्हें परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा—और उस ने कहा, कि वे हमारे सामने टिड्डे के समान हैं। मित्रो, यह बात वास्तव में सच है, क्योंकि यदि हम परमेश्वर के साथ

हैं और परमेश्वर हमारे साथ है, तो हमारे सामने प्रत्येक दानव टिड्डे के समान है। हम उसका सामना कर सकते हैं और उसे पछाड़ सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर के साथ हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं !

परन्तु, आज मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं, कि आज आप कहाँ है? क्या आप दासत्व में है ? या क्या आप जंगल में हैं ? या फिर ऊंचाई पर बसे उस देश में हैं जहाँ सच्ची शान्ति और आत्मिक आनन्द है ?

आपको चाहिए, कि आप मसीह पर विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर पाप के दासत्व से छुटकारा पा लें। आपको चाहिए, कि आप अविश्वास के उस जंगल में से बाहर निकल आएं जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने से आपको रोकता है। आपको चाहिए, कि आप परमेश्वर के उस अनन्त राज्य में प्रवेश करें जहाँ अनन्त शान्ति, और अनन्त आनन्द, और अनन्त जीवन है। परमेश्वर आपकी सहायता और अगुवाई करे।

"जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के"

मित्रो :

मसीह से सैकड़ों वर्ष पूर्व, इस्त्राएल जाति के बीच में एक कहावत बड़ी ही प्रचलित थी, जो इस प्रकार थी : "कि जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते, परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के।" यह कहावत वे लोग इस सम्बन्ध में कहते थे, कि यदि पिता ने कोई पाप या अपराध किया हो तो उनका विश्वास था कि उसकी सन्तान भी उसके कारण अपराधी मानी जाएगी। परन्तु यह कहावत उस समय की इस्त्राएल जाति तक ही सीमित न रही। किन्तु, आज भी अनेकों लोग इस कहावत में विश्वास रखते हैं और इस सम्बन्ध में प्रचार करते हैं। क्या आपने कभी नहीं सुना, कि लोग कहते हैं कि क्योंकि आदम ने पाप किया था इस कारण हम पापी हैं! क्या आपने कभी किसी प्रचारक को यह प्रचार करते नहीं सुना, कि हम आदम के पाप के कारण परमेश्वर की दृष्टि में अपराधी हैं? दूसरे शब्दों में, वे इस्त्राएलियों की तरह यूं कह रहे है, 'कि जंगली अंगूर तो पुरखा लोग खाते, परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों के।" किन्तु क्या यह सच है? सो आईए, कुछ समय के लिये हम इसी विषय में देखें।

सबसे पहिले तो हम यह देखते हैं, कि जिन दिनों में इस्त्राएल के बीच यह कहावत मशहूर थी, उस समय परमेश्वर ने भविष्यक्ता यहेजकेल के द्वारा उनसे यूं कहा था, "तुमको इस्त्राएल में फिर यह कहावत कहने का अवसर न मिलेगा। देखो सभों, के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।" "फिर यदि ऐसे

मनुष्य के पुत्र हों और वह अपने पिता के ये सब पाप देखकर भय के मारे उसके समान न करता हो। अर्थात न तो पहाड़ों पर (बलिदान किया) भोजन किया हो, न इस्त्राएल के घराने की मूरतों की ओर आंख उठाई हो, न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, न किसी पर अन्धेर किया हो, न कुछ बन्धक लिया हो, न किसी को लूटा हो, वरन अपनी रोटी भूखे को दी हो, नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो, दीन जन की हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज और बढ़ती न ली हो, मेरे नियमों को माना हो, और मेरी विधियों पर चला हो, तो वह अपने पिता के अधर्म के कारण न मरेगा, वरन जीवित ही रहेगा। उसका पिता, जिसने अंधेर किया और लूटा, और अपने भाइयों के बीच अनुचित काम किया है, वही अधर्म के कारण मर जाएगा। तौभी तुम लोग कहते हो, क्यों? क्या पुत्र पिता के अधर्म का भार नहीं उठाता? जब पुत्र ने न्याय और धर्म के काम किए हों, और मेरी सब विधियों का पालन कर उन पर चला हो तो वह जीवित ही रहेगा। जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का ; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल १८ : ३, ४, १४-२०)। सो यहाँ हम देखते हैं, कि परमेश्वर स्पष्टता से अपने वचन में हमें बताता है, कि जो प्राणी पाप करे वही अपराधी ठहरेगा ; और न तो पुत्र पिता के पाप के कारण दोषी ठहरेगा और न पिता अपने सन्तान के अपराध के कारण।

परन्तु, फिर ऐसा क्यों है कि आज बहुतेरे लोग इस बात में विश्वास रखते हैं, कि संसार में प्रत्येक मनुष्य आदम के पाप के कारण पापी है, अर्थात, वे कहते हैं, कि संसार में प्रत्येक बालक जो जन्म लेता है वह आदम के पाप कारण पापी होता है, अर्थात पाप मनुष्य को मीरास में मिला है। और इस प्रचलित शिक्षा को प्रमाणित करने

के लिये विशेष रुप से अकसर दो प्रमाण पेश किए जाते हैं। पहिले तो यह, कि क्योंकि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम को परमेश्वर ने आरम्भ में अपने स्वरुप पर बनाया था, और इसके बाद जब उसने पाप किया, और फिर कुछ समय पश्चात जब शेत नाम का पुत्र उसके यहां उत्पन्न हुआ तो उसके बारे में लिखा है, कि वह आदम के स्वरुप पर उत्पन्न हुआ। सो इस कारण क्योंकि आदम ने पाप किया था और शेत उसके स्वरुप पर उत्पन्न हुआ इसलिये वह अपने जन्म पर पापी ठहरा! और इसी आधार पर कहा जाता है, कि जितने भी मनुष्यों का जन्म उसके बाद हुआ, और होगा, वे सब के सब आदम के पाप के कारण पापी हैं। इसी प्रकार, इस प्रसिद्ध शिक्षा को प्रमाणित करने के लिए दूसरा प्रमाण यह दिया जाता है, कि क्योंकि पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, "इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" सो इस कारण सभी पापी हैं, नवजात शिशु भी !

परन्तु सच्चाई क्या है ? परमेश्वर क्या है ? परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना : ४ : २४)। अर्थात, यद्यपि परमेश्वर ने आरम्भ में मनुष्य को अपनी समानता पर बनाया, परन्तु तौभी परमेश्वर कोई मनुष्य नहीं है, उसकी मनुष्य की सी देह, हाथ, पांव नहीं हैं। तो फिर मनुष्य का परमेश्वर के स्वरुप में होने का तात्पर्य क्या है ? यह, कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरुप पर बनाया। अर्थात् मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, वह पशुओं के समान केवल एक प्राणी ही नहीं हैं, परन्तु वह एक आत्मिक प्राणी है, उसके पास एक आत्मा है जिसका अस्तित्व कभी समाप्त न होगा, क्योंकि वह अनन्त है। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा—और यह एक सच्चाई है, क्योंकि हमारा आधुनिक विज्ञान भी इस बात को प्रमाणित कर चुका है कि मनुष्य की देह के तत्व मिट्टी के समान हैं—किन्तु मनुष्य की देह की रचना करने के बाद परमेश्वर ने उसके

भीतर जीवन का श्वास, अर्थात् आत्मिक प्राण फूंक दिया और इस प्रकार आदम जीवता प्राणी बन गया। उसका अपना व्यक्तित्व था, वह प्रत्येक अन्य प्राणी से भिन्न था, वह परमेश्वर की तरह आत्मा नहीं था, किन्तु वह मनुष्य था।

किन्तु हम यह भी देखते हैं, कि आरम्भ में परमेश्वर ने प्रत्येक प्राणी और पेड़ पौधों इत्यादि की रचना बड़े ही अद्भुत और अश्चर्य-जनक ढंग से की। अर्थात् उसने उन सबको अपनी सामर्थ से बड़ा-बड़ा बनाया। और फिर परमेश्वर ने उन सबके भीतर यह विशेष गुण दिया कि वे सब अपनी अपनी जाति के अनुसार अर्थात अपनी अपनी समानता पर उत्पन्न करें। सो भविष्य में प्रत्येक पेड़-पौधे इत्यादि ने अपनी-अपनी समानता पर फल दिए, और प्रत्येक पशु-पक्षी इत्यादि ने अपनी-अपनी समानता पर अन्य पशु-पक्षियों को जन्म दिया। और इसी तरह, जब आदम के यहां एक पुत्र उत्पन्न हुआ तो वह उसी के समान, अर्थात एक मनुष्य की समानता में, आदम के ही स्वरुप पर उत्पन्न हुआ। किन्तु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है, कि आदम के पाप के कारण उसका पुत्र अपने जन्म पर पापी ठहरा। क्योंकि पाप एक कार्य है, और यह एक व्यक्तिगत वस्तु है। यदि आदम के पाप के कारण परमेश्वर उसकी सन्तान को या आपको और मुझे दोषी ठहराता है, तो यह बिल्कुल ऐसा ही होगा कि कत्ल कोई करे और दन्ड किसी और को मिले। क्या इस प्रकार का न्याय आपको पसन्द होगा? जी नहीं! यह स्पष्ट अन्याय है। सो फिर क्या हम सोच सकते हैं कि परमेश्वर ऐसा कर सकता है, अर्थात क्या वह हमें आदम के पाप के कारण दोषी ठहरा सकता है। कदापि नहीं। परन्तु वह कहता है, कि "जो प्राण पाप करे वही मरेगा।"

परन्तु, अब शायद आप यह पूछें, कि फिर इसका अर्थ क्या है,

जैसा कि बाइबल में लिखा है, कि "सब ने पाप किया है, और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"? जी हां, इस बात पर भी हम अवश्य ही देखेंगे। किन्तु सबसे पहले हम यह देखें कि "सबने पाप किया है" में क्या नवजात शिशु या छोटे बालक भी शामिल हैं? मान लीजिए, यदि मैं आपसे कहूं, कि हमारे घर में सभी काम करते है। किन्तु यदि मेरे घर में एक छः महीने का बालक भी हो, तो क्या मैंने आपसे कुछ गलत कहा? क्या मेरे लिये यह कहना उचित होगा, कि हमारे घर में छः महिने के एक शिशु को छोड़ और सभी काम करते हैं? या क्या आप मेरे से इस प्रकार के उत्तर की आशा रखेंगे? कदापि नहीं। क्योंकि हम सब जानते हैं कि एक छः महीने का शिशु काम नहीं कर सकता। परन्तु तौभी, मेरा यह कहना, कि हमारे घर में सभी काम करते हैं, कोई गलत नहीं है।

अब, पाप क्या है? पवित्र बाइबल में लिखा है, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (१ यूहन्ना ३ : ४)। सो पाप क्या है? परमेश्वर के नियमों, उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करना, उन्हें तोड़ना, उनका विरोध करना। परन्तु क्योंकि छोटे नन्हें बालक ऐसा नहीं कर सकते इसलिए उन्हें पापी कहना बिलकुल अनुचित है। मान लीजिए, एक दो वर्ष का बालक भरी हुई एक पिस्तौल उठाकर उस से खेलने लगता है, खेलते-खेलते अचानक उसका घोड़ा उस से दब जाता है और पिस्तौल में से गोली निकलकर किसी व्यक्ति के जा लगती है और वह मर जाता है। अब मैं आपसे पूछता हूं, कि क्या संसार में कोई ऐसा न्यायालय है जो उस छोटे बालक को हत्या के अपराध के लिये दोषी ठहराकर दन्डित करेगा? नहीं, कदापि नहीं। तो फिर हम ऐसा क्यों मान लेते हैं, कि परमेश्वर की दृष्टि में नन्हें मासूम बालक दोषी हैं, जबकि वे इस योग्य ही नहीं हैं कि कुछ समझें या किसी आज्ञा को तोड़े?

सो हम देखते हैं, कि हम में से कोई भी आदम के पाप के कारण दोषी न ठहरेगा। "परन्तु प्रत्येक व्यक्ति" जैसा कि बाइबल में लिखा है, "अपनी ही अभिलाशा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। और अभिलाशा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १ : १४, १५)।

निसंदेह, सबने पाप किया है, परन्तु हम ऐसा कभी सोच भी नहीं सकते, कि डेढ़ वर्ष का बालक शराब की दुकान पर जाकर शराब पीकर घर लौटे! सो सबने पाप किया है का अभिप्राय उन सब से है जो बालक नहीं परन्तु समझदार हैं; जो अच्छाई और बुराई को जानते हैं; जो अपना लेखा देने के योग्य हैं। (२ कुरिन्थियों ५ : १०)।

परन्तु मित्रो, परमेश्वर हमें तौभी दोषी नहीं ठहराना चाहता, क्योंकि उसने हमें पाप के दन्ड से बचाने के लिये हमारे पापों के कारण अपने पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया। और उसकी इच्छा है, कि हम सब यीशु में विश्वास लाकर और अपने पापों से मन फिराकर, जल में यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर, उसके द्वारा उद्धार पाएं। यीशु आपको बचाना चाहता है, वह आपको बचाने के लिये स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। और वह कहता है कि "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूगा।" (मत्ती ११ : २८)।

परमेश्वर अपने वचन को समझने और उस पर चलने के लिये आपकी सहायता करे।

मनुष्य उद्धार पाने के लिये क्या करे?

मित्रो :

आज हम एक बड़े ही पुराने परन्तु एक बड़े ही महत्त्वपूर्ण विषय के ऊपर विचार करगे। और वह प्रश्न यह है, कि मनुष्य उद्धार पाने के लिये क्या करे? यद्यपि यह प्रश्न मनुष्य के इतिहास में बड़ा पुराना है परन्तु यह बड़ा ही आवश्यक और महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि इसका सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा से है। उद्धार की आवश्यकता आपको भी उतनी ही है जितनी कि मुझे है और हम सबको है। यद्यपि आज संसार में एक बड़ी संख्या में लोग इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उचित उत्तर जानने के लिये व्याकुल हैं, परन्तु बहुत ही थोड़े लोग आज संसार में इस प्रश्न का उचित उत्तर वास्तव में जानते हैं। अर्थात, मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए?

कुछ लोगों का ऐसा विचार है, कि मनुष्य अपने उद्धार के लिये कुछ भी नहीं कर सकता, अर्थात यह काम पूर्ण रुप से परमेश्वर का है, और मनुष्य को उद्धार प्राप्त करने के लिये स्वयं कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। इस विषय में उनका विचार इस प्रकार का है, कि मान लीजिए यदि कोई व्यक्ति सख्त बीमार है तो वह पास में पड़ी दवाई की शक्ति पर ही विश्वास करके चंगा हो सकता है। सो वे लोग मानते हैं कि यदि कोई मनुष्य मानसिक रुप से प्रभु पर विश्वास लाता है या उसे अपने मन में अपना उद्धारकर्त्ता कहकर स्वीकार करता है तो वह अवश्य ही उद्धार पाएगा। परन्तु यह दृष्टिकोण, हम देखते हैं, प्रभु यीशु की शिक्षा के बिलकुल विपरीत है, क्योंकि उसने कहा, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन

में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७ : २१)। यहां से हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु द्वारा परमेश्वर की इच्छा पर चलने अर्थात उसकी बातों को मानने पर बल दिया गया है, केवल विश्वास करने पर नहीं। इसी प्रकार स्वयं प्रभु यीशू के बारे में भी एक जगह बाइबल में हम यूँ पढ़ते हैं: "और पुत्र होने पर भी उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५ : ८, ९)। सो यहां से हम सीखते हैं कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये अवश्य ही कुछ करना है। परन्तु प्रश्न यह है, कि मनुष्य उद्धार पाने के लिये क्या करे?

क्या मनुष्य को वही करना चाहिए जो उसे अपनी दृष्टि में उचित या सही प्रतीत हो? देखने में तो यह बात बिलकुल ठीक ही लगती है। क्योंकि अवश्य ही मनुष्य को वह कामनहीं करना चाहिए जो उसे उचित प्रतीत न हो। परन्तु यद्यपि कोई मनुष्य अपने दृष्टिकोण से कोई उचित ही काम करे तौभी यह आवश्यक नहीं है कि वह काम परमेश्वर की इच्छानुसार है। क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)। एक मसीही बनने से पहिले प्रेरित पौलुस मसीह की कलीसिया को सताता था और मसीही लोगों पर घोर अत्याचार करवाता था, परन्तु बाद में हम देखते हैं कि वह अपने इन कामों से पछताता है, और एक जगह कहता है, कि उस समय मैं ने ऐसा ही करना उचित समझा था। सो जो बात आज हमें उचित प्रतीत होती है वही कल अनुचित प्रमाणित हो सकती है। सो इस कारण हम अपनी दृष्टि में उचित प्रतीत होनेवाले काम को करके वास्तव में

उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते ।

तो फिर क्या मनुष्य को अपने माता-पिता की बात को मान-कर जो कुछ वे कहें वही करना चाहिए ? यह बात भी हमें ठीक ही लगती है। क्योंकि मनुष्य को अपने माता-पिता का कहना मानना चाहिए। और प्रभु यीशु ने सिखाया है कि हमें अपनें माता-पिता का आदर करना चाहिए। परन्तु इस आत्मिक विषय के ऊपर मनुष्य होने के कारण उनके विश्वास तथा धारणाएं भी अनुचित हो सकते हैं। और यदि हम इस विषय में उनके आदेश का पालन करें तो इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हम अवश्य ही परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं। अकसर देखने में आता है कि लोग यदि किसी धर्म या विश्वास को मान रहे हैं तो वे इसी विचार से उसमें है, क्योंकि उनके माता-पिता उसमें हैं या थे। अर्थात उनका अपना कोई निश्चय या विश्वास नहीं है, परन्तु केवल माता-पिता के ही आदर्शों वा सिद्धांतों पर चलकर वे उद्धार प्राप्त करना चाहते हैं। इस प्रकार की धारणा वास्तव में अनुचित है। क्योंकि यदि माता-पिता अज्ञानता के कारण झूठ की प्रतीति कर रहे हैं और उनकी सन्तान भी उन्हीं के विश्वास को अपना ले तो उनका विश्वास भी झूठा ही ठहरेगा। परन्तु प्रभु यीशु ने कहा, कि जब तुम सत्य को जानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहना ८ : ३२)। तो मित्रो, सत्य क्या है?

क्या मनुष्य को वास्तव में यह जानने के लिये कि उसे उद्धार पाने के लिये क्या करना आवश्यक है अपने प्रचारक की बात को मानना चाहिए ? अब यह बात भी बहुत सीमा तक उचित प्रतीत होती है। हमें अपने प्रचारक का आदर करना चाहिए, और उसकी बातों को मानना चाहिए। क्योंकि यदि हम उन बातों को मानने

के लिये तैयार नहीं हैं जो वह हमें सिखाता है तो फिर उसकी बातें सुनने ही से क्या लाभ ? किन्तु फिर भी क्योंकि प्रचारक भी एक मनुष्य ही है, इस कारण इस महत्वपूर्ण प्रश्न के ऊपर उसके विचार भी परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हो सकते हैं। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है "हे प्रियो हर एक आत्मा की प्रतीति न करो : बरन आत्माओं को परखो, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।" (१ यूहन्ना ४ : १)। किन्तु जबकि कुछ लोग जानबूझकर या सत्य के प्रति अन्धे बनकर झूठ का प्रचार करते हैं, दूसरी ओर कुछ ऐसे भी हैं जो झूठ को सत्य समझकर निष्कपटता के साथ ऐसा करते हैं। प्रभु यीशु ने इस सम्बन्ध में एक जगह चेतावनी देकर यूँ कहा, "और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे।" (मत्ती १५ : १४)। सो इस बारे में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि जब कोई प्रचारक हमें वचन सुनाता है तो हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम उसके वचन को परखें। बाइबल के लेखक का ठीक यही अभीप्राय है जबकि वह कहता है, कि हर एक आत्मा की प्रतीति न करो परन्तु आत्माओं को परखो। अब मान लीजिये, यदि मैं आपसे कहूं कि आप मुझे अपने घर का बिलकुल सही नाप अर्थात लम्बाई, चौड़ाई इत्यादि बताईए, तो आप क्या करेंगे ? निश्चय ही, आप यदि मुझे बिल्कुल सही नाप बताना चाहेंगे तो आप उसे नापनेवाली टेप या स्केल से नापकर बताएंगे । या मान लीजिए, यादि मैं आपसे कहूं कि आप मुझे अपने रेडियो का बिल्कुल ठीक वज़न बताईए। तो यदि आप वास्तव में मुझे सही वज़न बताना चाहेंगे तो आप बैठकर इस बारे में अन्दाज नहीं लगाएंगे परन्तु आप उसे तराज़ू पर रखकर तौलेंगे । इसी प्रकार अब यदि आप मेरे प्रचार को परखकर यह जानना चाहें कि क्या मैं बिलकुल सही प्रचार

कर रहा हूं या नहीं ; क्या मैं वास्तव में परमेश्वर का वचन ही आपको बता रहा हूं या नहीं, तो आपको क्या करना चाहिए ? निसंदेह आपको चाहिए कि आप मेरी प्रत्येक शिक्षा और उपदेश को पवित्र बाइबल में लिखे वचन से मिलाएं, और जो कुछ मैं कहता हूं वह यदि बाइबल के अनुसार है तो आप उसे मानें, और यदि नहीं है तो आप उसे अस्वीकार कर दें। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो हमें प्रत्येक प्रचारक के प्रचार को परखने के लिये काम में लाना चाहिए। क्योंकि जिसे हम बाइबल कहते हैं, यह वह पुस्तक है जिसमें परमेश्वर का वचन लिखा हुआ है। यह एक ऐसा मापदन्ड या तराजू है जिसके ऊपर हम प्रत्येक प्रश्न को और विशेषकर आत्मिक प्रश्न को रखकर उसका बिलकुल उचित उत्तर मालूम कर सकते हैं।

सो अब, जबकि हमने एक उचित साधन ढूंढ़ लिया है, तो हमारे इस प्रश्न का बिलकुल ठीक उत्तर क्या है, कि मनुष्य उद्धार पाने के लिये क्या करे ? बाइबल, परमेश्वर का वचन हमें बताता है, कि क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु का लोहू क्रूस के ऊपर बहाकर जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित चुका दिया है, इस कारण आज प्रत्येक मनुष्य यीशु मसीह के द्वारा अपने पापों से उद्धार प्राप्त कर सकता है। (यूहन्ना ३ : १६ ; १ यूहन्ना ४ : १०)। सो अब यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना चाहिए ?

सबसे पहिले तो बाइबल हमें बताती है, कि हमें यीशु मसीह में विश्वास करना चाहिए ; और दूसरे, हमें अपने सब पापों से मन फिराना चाहिए ; और तीसरे, हमें पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, जिसका अर्थ है जल के भीतर अपने पूर्व जीवन को एक मरे हुए व्यक्ति के समान गाड़ देना और उसमें से

बाहर निकलकर एक नए जीवन की चाल चलना आरम्भ करना। इस सम्बन्ध में पवित्र बाइबल में हम यूँ पढ़ते हैं :

मरकुस १६ : १६ में यीशु ने कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" फिर, जब यीशु पर विश्वास न करनेवाली लोगों कि एक भीड़ ने यह पूछा, कि हम उद्धार पाने के लिये क्या करें ? तो प्रेरितों २ : ३८ में हम पढ़ते हैं कि उन में से एक ने उन्हें उत्तार देकर यूँ कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ; तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे ।"

सो जब हम मसीह पर विश्वास लाते हैं और अपना मन फिराते हैं और बपतिस्मा लेते हैं, तो इस प्रकार हम परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करते हैं और वह हमें उद्धार देता है। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्रभु की आज्ञाएं मान लेने के बाद अब हम जैसा चाहें जीवन बिताएं, क्योंकि प्रभु ने कहा, कि यदि कोई मनुष्य उसके प्रति प्राण देने तक विश्वासी रहे तो वह उसे जीवन का मुकुट देगा। (प्रकाशितवाक्य २ : १०)।

परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आपको ताकत और समझ दे।